श्रीधन्वन्तरये नमः

वैद्यसम्मेलन-पत्रिका

निखिल भारतवर्षीय वैद्य-सम्मेलनकी

त्रैमासिक मुख पत्रिका।

प्रथम वर्ष } वैशाख-आषाढ़ १९७२ वै० { तृतीय संख्या

(वार्षिक मूल्य २)

विषय सूची।

समालोचक मुद्र

सम्पादक

किशोरीदत्त शास्त्री, सूर्यप्रसाद वाजपेयी,

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल।

॥ श्रीधन्वन्तरयेनमः ॥

वैद्य सम्मेलन पत्रिका

निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनकी
स्थायीसमिति आयुर्वेदमहामण्डल
और आयुर्वेदविद्यापीठकी ओरसे
प्रकाशित ।

प्रथम वर्ष } वैशाख—आषाढ़ सं० १९७२ वै० { तृतीय संख्या

उपाधि पर उछलकूद ।

—:०:—

इस वर्ष बम्बईके कुछ वैद्य डाक्टरोंने श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचारके भोलेभाले मालिक सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास और उसके निष्कपट ब्राह्मण सम्पादक पण्डित अमृतलाल चक्रवर्तीको मिलाकर दिसम्बर महीनेमें एक सभा कर डाली और उसमें एक प्रस्ताव पास कर यत्रतत्र उसे प्रकाशित करने और उसीके ढोल पीटने आरम्भ कर दिये । उस सभामें सम्मिलित रहनेवाले वैद्य-डाक्टर वैद्यसम्मेलनके कामोंकी पूरी खोज खबर रखते हैं या नहीं, उसकी घटना, उसके कार्यक्रम, उसकी नियमपद्धति आदिके विषयमें कुछ जानकारी रखते हैं या नहीं, इस विषयमें हमें जबरदस्त सन्देह है ; क्योंकि यदि ऐसा होता तो ये लोग इस विषयकी दुन्दुभी न पीटते फिरते कि "वैद्य सम्मेलन विना परीक्षा पदवी देता है, इससे विद्वान वैद्यों, वैद्यक-शिक्षणकी संस्थाओं तथा उन संस्थाओंके लब्धविद्य ग्रेजुएटोंके साथ साथ सर्वसाधारण प्रजाके लिये भी अत्यन्त हानिकर है ।"

प्रस्तावका उद्देश्य अवश्य ही साधु है ; किन्तु वह अस्थानिक है, अप्रयोजनीय है और निष्कारण है। वैद्यसम्मेलन "वैद्यकविज्ञान-शास्त्रके विषयमें ज्ञान-लाभ-सूचक पदवियोंसे" उन्हीं लोगोंको विभूषित करता है, जो नियमानुसार उसके निश्चित पाठ्यक्रमके अनुसार शिक्षा लाभ कर परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं। इसके सिवाय कभी कभी ऐसा अवसर आसकता है कि किसी विशेष सज्जनको आयुर्वेदकी विशेष विज्ञताके कारण सम्मानार्थ विद्वत्ता सूचक पदवी दी जा सके और ऐसा अवसर संसारकी सभी युनिवर्सि-टियोंके लिये "डाक्टर" आदि एकआध पदवी देनेके समय आता है। इसके सिवाय व्यवसायकी विज्ञता-सूचक कुछ पदवियां भी सम्मेलन दे सकता है ; परन्तु हम नहीं समझते कि उसके लिये किसी विद्यालयके किसी ग्रेजुएटको ईर्षा करनेका कारण हो।

वैद्य सम्मेलनकी पुनर्घटनाको देखते हुए यह कहा ही नहीं जासकता कि किसी एक मनुष्यकी इच्छासे कोई काम हो सके। अतएव यह हो ही नहीं सकता कि किसी खन्दकसे पकड़लाये हुए कुन्दे तराशके गले पदवी का प्रतिष्ठापत्र बांध दिया जाय। इतने बड़े विशाल भारतवर्षके जिन चार छः वैद्योंको कभी वर्षों बाद व्यवसायकी विज्ञता सूचक कोई पदवी मिलती है वह वर्षोंकी जांच, परिचय, अप्रत्यक्ष परीक्षा, कार्य कुशलता आदिके निश्चयके पश्चात मिलती है और वह भी एक दो नहीं दश पांच ऐसे "देश प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ वैद्यराजों" की समितिकी सम्मतिसे मिलती है जिनमेंसे एकही वैद्यको श्रीवेङ्कटेश्वर सम्पादक अपनी खातिरी होने पर पदवी देनेका अधिकारी समझता है। इतना होने पर भी क्या वह पदवी पानेवाला केवल व्यवसायकी विज्ञता ही रखता है ? नहीं उसका वैद्यक सम्बन्धी शास्त्रज्ञान भी ऐसा वैसा नहीं होता जैसे शिक्षार्थियोंको परीक्षा देनेके पश्चात आप पदवी पानेका अधिकारी मानते हैं, ऐसे चार छःको वह प्रतिवर्ष वैद्यक पढ़ाकर तैयार करता है। यदि ऐसे कुछ वैद्योंको सम्मानार्थ कोई पदवी मिल भी जाय तो हम नहीं समझते कि उससे किसीके पेटमें पीड़ा उठनी चाहिये। वैद्य सम्मेलनको जैसे नवयुवकोंमें यथाविध विद्याभ्यास कर परीक्षा देनेके पश्चात कार्यमें अग्रसर होनेका

चाव उत्पन्न करना है उसी प्रकार जो वर्षोंसे सफलता पूर्वक चिकित्सा कर्म करते आरहे हैं और जिनकी योग्यताकी धूम अपने अपने प्रान्तमें ही नहीं दूर तक मची हुई है; किन्तु जो अब अधिक आयुके कारण या व्यवसायकी अधिकताके कारण परीक्षाका झंझट नहीं उठा सकते, उनकी भी प्रतिष्ठा रखनी है, उन्हें भी आयुर्वेदके उद्धारकार्यमें सम्मिलित करना है, उन्हें भी उत्साहितकरनूतन कर्तव्यमार्गमें लाना है; अतएव उनकी ओर भी उसे एक दृष्टि बनाये रखना है।

आयुर्वेदमहामण्डलके संगठनका पूर्णज्ञान और परिचय प्राप्त किये बिना केवल कुछ लोगोंके कहनेसे ही (और तारीफ यह कि वे कहनेवाले भी आयुर्वेदमहामण्डलके कामका कोई विशेष प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं रखते।) आयुर्वेदमहामण्डलके लिये यह लिखना कि "बड़े ही खेदकी बात है कि बिना परीक्षा केवल अपने महामण्डल नामके बलसे वह सभा पदवी बांटनेका यह अश्चर्यजनक अधिकार ले बैठी है" कितना हास्यास्पद है ; और सम्पादकीमें उमर बितानेवाले श्रीवेङ्कटेश्वर समाचारके तत्कालीन सम्पादकके बिना पूरी जानकारी रखे ऐसा लिखनेके लिये "आश्चर्यजनक अधिकार ले बैठनेका" मजेदार उदाहरण है। हमें खेद है कि श्रीवेङ्कटेश्वर सम्पादकके इस तात्विकसत्य किन्तु वैद्यसम्मेलनके सम्बन्धमें न घटित होनेवाले वाक्यका प्रतिवाद किये बिना हम नहीं रह सकते कि परीक्षासे जिसकी योग्यता स्थिर नहीं हुई ऐसे मनुष्योंको वैद्यकी पदवीका वितरण जनसाधारणके प्राणहरणका उपाय सुगम कर देनेवाला है।" यह वाक्य आयुर्वेद महामण्डल की प्रामाणिकता पर केवल सन्देह उत्पन्न करनेवाला ही नहीं बलिक उसके विद्या विभागकी ओरसे पदवी पानेवाले सज्जनोंके लिये भी अपमानजनक है। श्रीवेङ्कटेश्वरके तत्कालीन वृद्ध सम्पादकका समुचित समादर करते हुए भी हम क्षुब्ध हृदयसे यह कहना चाहते हैं कि आयुर्वेदके समुज्वल रत्नोंके विषयमें ऊपरकासा गन्दा वाक्य लिखनेके कारण यदि उन्हें कुछ सन्ताप और पश्चात्ताप होगा तो हमें सन्तोष होगा। आयुर्वेदमहामण्डल किसीको कोई पदवी नहीं देता, इसके लिये उसका विद्याविभाग "आयुर्वेदविद्यापीठ" नामसे अलग है। वह विभाग

जिसे पदवी देता है उसकी योग्यताकी जांच अनेक मार्गोंसे कर लेता है। नियमानुसार सब बातों पर विचार होता है, उसकी विद्वत्परिषद्से अनुमोदित होने पर ही ऐसा प्रसंग आता है। पुनर्सङ्गठनके पश्चात् आयुर्वेदमार्तण्डकी पदवी पानेवाले आयुर्वेदीय-ग्रन्थमाला सम्पादक पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्यके आयुर्वेद-ज्ञानका प्रकाश समूचे भारतवर्षमें प्रखरमार्तण्डके समान फैल रहा है। वैद्यपञ्चाननकी पदवी पानेवाले पण्डित कृष्ण शास्त्री कवड़े महाराष्ट्रके आयुर्वैदिक आन्दोलनकी जान हैं और पूनेके आयुर्वेद-विद्यालयके प्रबन्ध और शिक्षाके एक प्रधानस्तम्भ हैं। दूसरे वैद्य-पञ्चानन पण्डित जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदीके द्वारा गुजरात प्रान्तमें जो आयुर्वेदका कल्पतरु रोपा गया है और जो स्वयं आयुर्वेद-की उन्नतिके लिये पुरुषार्थकी मूर्ति हैं उन्हें पञ्चानन क्या सहस्रानन कहनेमें भी किसी को क्षोभ नहीं होगा। चिकित्सक चूड़ामणियोंमें रीवांके राजवैद्य (नामके लिये नहीं सदा महाराजके साथ रहने-वाले) पं० बालमीकिजीकी जिह्वा पर आयुर्वेदीय ग्रन्थोंका पाठ जिस प्रकार नाचा करता है और अपने कठिन रसायन क्रियासे ले अनेक प्रकारके अनुभूत प्रयोगोंसे जैसा वे प्रति वर्ष वैद्यसम्मेलन-के उपस्थित वैद्योंको प्रसन्न करते हैं उसे कौन नहीं जानता? दूसरे रत्नमालाके पण्डित चन्द्रशेखरधर मिश्रके विषयमें किसे नहीं मालूम कि वे केवल अपने खर्चसे एक वैद्यकपाठशाला चला रहे हैं और स्वयं उसके प्रधान अध्यापक हैं और कितने ही धर्मार्थ औषधालय आपके द्वारा चल रहे हैं; विषैले जीवोंके विष दूर करने तथा अन्य कई औषधियोंके आप आविष्कारक हैं। तीसरे चूड़ामणि पण्डित रामेश्वर मिश्र हिन्दू कालेजकी वैद्यकपरीक्षा पास हैं, स्वर्गीय महा-महोपाध्याय कविराज द्वारकानाथ सेनसे पढ़े हुए हैं, यही नहीं उनके पढ़ाये हुए विद्यार्थीने इस वर्ष आयुर्वेद विद्यापीठकी परीक्षामें सर्वोत्तम नम्बर पाया है, कोर्सके बाहरके भी वैद्यक, सांख्य और न्यायमें पण्डितोंसे शास्त्रार्थ कर वह उत्तीर्ण समझा गया है और वैद्यसम्मेलनसे उसने स्वर्णपदक प्राप्त किया है। पण्डित ठाकुर प्रसाद शर्म्माकी योग्यताके विषयमें अधिक न कह कर यदि इतना ही कह दिया जाय कि वे वैद्यसम्मेलनके सहयोगी सभापति हैं तो भी हमारी समझमें बस होगा। पण्डित रामचन्द्रशर्माके विद्यार्थी

भी परीक्षामें आते हैं और पास होते हैं और उन्हींका काम था कि मथुराका वैद्यसम्मेलन सफलता पूर्वक हुआ। क्या श्रीवेङ्कटेश्वर सम्पादक बतलावेंगे कि इनमें कौन भूमि फोड़ कर निकला हुआ और जन साधारणका प्राण हरण करनेवाला है। वाक्य वह कहना चाहिये जो पतेका हो और जिसकी कुछ कीमत हो।

नियमानुसार परीक्षा देकर पदवी पानेवालोंकी संख्या बढ़ाना अवश्य हमारा कर्तव्य है किन्तु बहुत वर्षोंसे सफलता और सुयोग्यता पूर्वक वैद्यक करते आनेवाले उत्कृष्ट और सर्वसाधारण पर अपनी योग्यताकी छाप वैठाये हुए कुछ वैद्योंको सम्मानार्थ पदवी देना पाप है अथवा उसे श्रीवेङ्कटेश्वरके शब्दोंमें "सावधान? इस प्रकार मारात्मक भ्रम" हम किसी प्रकार समझनेमें समर्थ नहीं हैं। युनिर्सिटियां लोगोंको डाक्टरकी पदवियां दें तब वे ग्रेजुएटोंके लिये निराशाजनक अथवा हानिकारक न हों। सरकार बिना परीक्षाके वैद्यरत्नकी पदवी दे तब किसीके लिये बिसूवियसका ज्वालामुखी न फूट पड़े; किन्तु वैद्यसम्मेलन बहुतही जांच पड़तालकेबाद किसोको पदवी दे तो भयानक भूकम्प हो जाय, दिग्गज डोल उठें, महासागर उछलने लगे, दावानल दहकने लगे, मारात्मक महामारी फैल जाय, यह दिल्लगी नहीं तो क्या है? जिसश्रीवेङ्कटेश्वरने उपाधिकी निरर्थक उछल कूदमें छः कालमखर्च किये थे, हम पूछते हैं उसने वैद्यसम्मेलन होने पर उस पर अपना विचार, अपनी सम्मति प्रकट करनेमें कितनी जगह खर्च की है?

सम्पादकीय विचार।

आयुर्वेदकी आवश्यक पूर्तियां।

:o:

ऋषिकुल हरिद्वारके वैद्यराज पण्डित नारायणदत्त शर्माने समाचार पत्रोंमें एक लेख छपाया है, जिसमें आपने विचार किया है कि आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये कौन कौनसे कार्य करना आवश्यक हैं। आपकी सम्मति है कि यद्यपि आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये इस

समय कई काम किये जाते हैं और धनव्यय भी होता है तथापि वे कार्य उन्नतिपथमें नहीं चलाये जाते। आपकी सम्मतिमें सबसे पहले अष्टाङ्ग आयुर्वेदकी शिक्षाके लिये एक विद्यालय होना चाहिये और शल्यशालाक्ययन्त्रोंका निर्माण नयी पुरानी पद्धतियोंका विचार कर किया जाय। एक वनस्पति उद्यान और रस, धातु, भस्म तैयार रखनेवाली रसायन शाला चाहिये। चिकित्सालय और रुग्णालयके बिना तो विद्यालयकी शिक्षा ही अधूरी रहेगी। एक ऐसे जनरल-स्टाककी आवश्यकता है जो सबतरह औषधियां तैयार कर बेचे। एक ऐसी पुस्तक चाहिये जिसमें प्रत्येक रोगके अनुभूत और उपयोगी चूर्ण, तेल, घृत, वटी, रसादिके नाम और ग्रन्थोंका पता लिखा रहे। दूसरी ऐसी भी पुस्तक हो जिसमें औषधियोंके नाम, उनके प्रयोग और उनके बनानेकी विधि लिखी रहे। इनका संग्रह एक अनुभवी और पठित वैद्यकमिटीके द्वारा हो, इनके विषयमें प्रत्येक प्रान्तके वैद्योंसे भी सम्मति ली जाय। यह पुस्तक फर्मा-कोपियाके ढङ्गकी होगी। आप वैद्योंमें परस्पर प्रेमभाव और सहानुभूतिकी भी आवश्यकता समझते हैं। आपने वैद्योंकी फीस भी नियुक्त करनेकी सम्मति दी है परन्तु वैद्यसमुदाय अभी इतना सुसङ्गठित नहीं है कि अपनी सभाके मन्तव्यको अमिट समझ प्रत्येक वैद्य उसके पालनका महत्व समझ सके और उसे व्यवहार-में ला सके। जो हो, आपकी सम्मतिके अनुकूल सभी काम होते देखना वैद्यसम्मेलनको अभिप्रेत है। प्रत्येक वैद्यका कर्तव्य है कि वह अपने अन्य भाइयोंमें इन विचारोंका प्रचार करे जिससे वैद्यसम्मे-लनको आवश्यक अवसर पर लोगोंकी अनुकूलता प्राप्त हो सके। आपकी सम्मतिके अनुसार बिना विचारे विदेशी औषधियोंका व्यवहार करना भी वैद्योंके लिये लाञ्छनास्पद है। हां, यदि कुछ विदेशी औषधियोंके व्यवहारकी आवश्यकता ही हो तो उसके विषयमें सम्मेलनद्वारा विचार होने पर ग्रहण करना चाहिये। वैद्योंमें इस प्रकारके विचारोंका होना जितना आनन्दप्रद है, उतनाही सर्वसाधारणके समक्ष अपने विचारोंको उपस्थित कर लोगोंको उन पर विचार करनेका अवसर देना अभीष्ट है।

उपाधि पर उपाधिशून्य ।

श्रीवेङ्कटेश्वर समाचारने वैद्यकसम्बन्धी उपाधियोंके सम्बन्धमें जो घोर तर्जन गर्जन किया था उसपर एक मार्मिक विद्वानने १० जनवरीके "कलकत्ता समाचार" में "एक उपाधिशून्य" के नामसे अपनी सम्मति प्रकाशित की है। हमें यह जानकर विशेष आनन्द हुआ है कि "उपाधिशून्य" महाशय स्वयं वैद्य नहीं हैं। अपने लिखा है। "हमारी रायमें आयुर्वेद सम्मेलनकी वर्तमान कार्यप्रणालीको देखते हुए इस समय न तो इस प्रस्तावकी कोई आवश्यकता थी और न अकालवर्षी अश्मगर्भपर्जन्यकी भांति श्रीवेङ्कटेश्वरके घोर तर्जन गर्जन की। आरम्भके दो सम्मेलनोंके सम्बन्धमें इस समय विवाद उठाना व्यर्थ है, उस समय जो कुछ उद्योग आयोजन हुए उनसे स्वर्गीय पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदेने सोये हुए वैद्यसमुदायको जगाया था। जो हो, आयुर्वेदमहामण्डल वा वैद्यसम्मेलनने अपने पुनर्गठनके बाद किसीको ज्ञान लाभ सूचक पदवी योंही नहीं दी है, उनके लिये उसने परीक्षाएँ नियत कर रखी हैं। ....तीन वर्षसे ये परीक्षाएँ ली जा रही हैं; पहली और दूसरी परीक्षामें कितने ही सुयोग्य छात्र उत्तीर्ण हो चुके हैं। हां, जिस तरह संसार भरकी युनिवर्सिटियां या संस्थाएँ सुयोग्य पुरुषको उनके स्वरूपानुरूप प्रतिष्ठासूचक उपाधियोंसे पुरस्कृत किया करती हैं, उसी प्रकार भारतवर्षके समस्त वैद्योंका प्रतिनिधि रूप यह आयुर्वेदसम्मेलन भी कुछ देश सम्मानित वैद्योंको प्रतिष्ठासूचक उपाधियोंसे भूषित कर चुका है, पर उसकी यह कारवाई न तो आंख मूंदकर होती है और न किसीकी सिफ़ारिश से। प्रान्तीयमन्त्री अपने अपने प्रान्तके सम्मानार्ह सुयोग्य वैद्योंकी लिस्ट कार्यकारिणी कमिटीमें भेजते हैं, बहुत सी काटछांटके बाद वह लिस्ट आयुर्वेदविद्यापीठमें पेश होती है; तब कहीं आयुर्वेदविद्यापीठ उनमेंसे कुछ चुने हुए वैद्योंको पदवी प्रदान करता है। मथुराके सम्मेलनमें जिन आठ वैद्योंको उपाधियां मिली हैं, वे अलिफ़लैलाके 'कालेदेव' की तरह ज़मीन फाड़कर भी नहीं निकले हैं और हवाई जहाज़के गोलोंकी भांति अचानक आसमानसे भी नहीं गिरे हैं, बल्कि वे ऐसे

प्रतिष्ठित पुरुष हैं कि भारतवर्ष भर जिनकी योग्यताके सम्बन्धमें कोई अँगुली नहीं उठा सकता ।········जो अपनी चिकित्सा और अव्यर्थ औषधोंसे हज़ारों लोगोंको लाभ पहुँचा रहे हैं, उनका सम्मान होनेसे लोगोंको हर्ष होगा न कि विषाद । श्रीवेङ्कटेश्वर बतलावे कि योग्यता जांचने और परीक्षा लेनेका कुर्सी मेज़के सहारे बैठकर प्रश्नपत्र दिये जानेके सिवा भी कोई उपाय है या नहीं ? यदि है तो उसी प्रकारसे परोक्षा लेकर अपने अनुभवसे वैद्यसम्मेलन पदवी देता है और उसका यह कार्य अनुचित नहीं कहा जा सकता ।" इसपर अधिक कहना व्यर्थ है ।

निखिल भारतवर्षीय वैद्यानां

षष्ठे सम्मेलने कलकत्तायां समुपस्थापितानां

प्रस्तावानां प्रतिलिपिः ।

———:०:———

प्रथमः प्रस्तावः ।

सम्प्रति सम्प्रवृत्ते योरपीयमहासमरे न्याय-धर्म-रक्षार्थं युद्ध-सम्मिलितानामस्मदीयसम्राजां पञ्चमजार्जमहोदयानां विजयार्थे-तत्सम्मेलनं सर्वथान्तःकरणदानपुरस्सरं सर्वेश्वरं प्रार्थयते ।

द्वितीयः प्रस्तावः ।

अस्माकं राजप्रतिनिधीनां प्रजाप्रिय-लार्ड-हार्डिञ्जमहोदयाना-मस्मिन्नेव वर्षे पत्नीवियोगः, उत च योरपीयमहासमरगतानां प्रिय-पुत्राणां वियोगो दुःखकरः संजातः । अस्मिन् वियोगद्वयजे दुःखे एतत्सम्मेलनं हार्दसहानुभवपुरस्सरं समवेदनां प्रकटयति ।

तृतीयः प्रस्तावः ।

निम्नांकितानां सज्जनानामसामयिकपरलोकवासितया आयुर्वेदस्य महीयसी हानिस्सञ्जाता, अत एतत्सम्मेलनमानसिकशोक-प्रकाशनपुरस्सरं तत्कौटुम्बिकानां सनाभीनां सविधे समवेदनां प्रकटीकरोति ।

१—रसायनाचार्यः पं० त्र्यम्बकगुरुनाथकाले पुण्यपत्तनीयः ।
२—वैद्यराज पं० विष्णुकृष्ण पुराणिक पनवेल (बम्बईप्रान्त)
३—पं० वैद्यनाथ शर्मा राजवैद्य प्रयागस्थ ।
४—वैद्यराज पं० गणपति शर्मा रावलपिण्डी ।
५—प्राणाचार्य गोपालराव विवलकर नासिक ।
६—कविराज कृष्णचन्द्रमा सेनियाल वर्धमान ।
७— ,, रेवतीकान्तराय चौधरी टांगाइल (मैमनसिंह)
८—बाबू राजकुमार सरकार राजशाही ।
९—कविराज चन्द्रकुमार कविभूषण राजवैद्य त्रिपुरा ।
१०— ,, राधिकानाथ राय श्रीखण्ड ।
११—कविराज-आनंदचन्द्रसेन विक्रमपुर ।
१२— ,, जयकुमार भट्टाचार्य राजवैद्य त्रिपुरा ।
१३—पं० मुकुंदराम जोशी काशीपुर तराई ।
१४—मनीषी समर्थदान अजमेर ।
१५—सेठ मानिक चन्द्र हीराचन्द्र बंबई ।
१६—पं० भैरव प्रसाद पांडेय लखनऊ ।

उपरि निर्दिष्टास्त्रयोऽप्युपक्षेपाः ।

सभापतिमहोदयैः समुपस्थापिताः सर्वैरासनपरित्यागपूर्वकमनुमोदिताश्च ।

तुरीयः प्रस्तावः ।

श्रीयुक्त टी० परमेश्वरम् मूस (तृअगाड कोडाकल एस० मलाबारस्थ)-महोदयानां वैद्यरत्नापाधि प्राप्तौ सम्मेलनमेतत् सर्वथाल्हादं प्रकाशयति ।

सभापतिमहोदयैः समुपस्थापितः, सर्वैरनुमोदितश्च ।

पञ्चमः प्रस्तावः ।

वर्षाज्वरानुसन्धानसमित्यां (मलेरिया कमीशन) माण्डलिकसमितिभ्यः (डिस्ट्रिक्ट कमेटियोंसे) कविराज हरिरंजन मजुमदार एम्० ए० काशी, पं० शिवराम पाण्डेय वैद्य प्रयाग, चिकित्सक चूड़ामणि ठाकुर ज्ञानसिंह, पं० अयोध्याप्रसाद ज्योतिषी झांसी- इत्येतेषां महोदयानां नियुक्तिः सम्मेलनेनानेन सानंदं राजाज्ञां प्र त

कृतज्ञत्वं प्रकाश्यते, आशास्यते च स्वास्थ्यानुसंधाने रोगविनिश्चये च सर्वदैवमेव प्रभुभिरवश्यं वैद्यानां नियुक्तिकरण उदारता प्रदर्शयिष्यते ।

प्रस्तावकः—करुणाकुमार सेन कलकत्ता ।

अनुमोदकौ—वैद्य कल्याणसिंह अजमेर ।

हरिप्रसाद मिश्र बुरहानपुर ।

षष्ठः प्रस्तावः ।

विहारप्रान्तप्रभुभिरायुर्वेदमहामण्डलप्रार्थनानुसारं जगन्नाथपुरी-मुजफ्फरपुरीय संस्कृतशिक्षामहाविद्यालययोर्या व्याकरणादिवदायुर्वेदशिक्षणव्यवस्थाज्ञा दत्ता, उक्तं च—अनेन कर्मणायुर्वेदस्योन्नतिर्भविष्यति यामभिलषति सर्वोपि साधारणो जनः । विहार प्रान्तीयप्रभूणामेतां न्यायपूर्णामुदारतां सम्मेलनमेतद्धृदा उररीकरोति, धन्यवादाँश्च विकिरति ।

प्रस्तावकः—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल प्रयाग ।

अनुमोदकाः—पं० ब्रह्मनारायण मिश्र आरा ।

पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयी उन्नाव ।

पं० गोविन्दप्रसाद शास्त्री जबलपुर ।

कविराज शीतलचन्द्र कविरत्न कलकत्ता ।

पं० रामचन्द्र शर्मा गोकुल (मथुरा) ।

सप्तमः प्रस्तावः ।

कलकत्ता, मद्रास, लाहौरस्थ विश्वविद्यालयान् (युनिवर्सिटी) काशीस्थसंस्कृतपरीक्षापरिषदं (बोर्ड) च सानुनयमभ्यर्थयते यद्विहारप्रदेशवत् तैरपि स्वस्वविद्यालयेषु शिक्षापरीक्षादिविधौ शास्त्रान्तरवद् आयुर्वेदोऽपि प्रतिष्ठामारोपणीय इति ।

प्रस्तावकः—पं० अप्पा शास्त्री साठे बम्बई ।

अनुमोदकाः—पं० रामेश्वर मिश्र कानपुर ।

कविराज मोतीलालदास वरीसाल ।

पं० अयोध्याप्रसाद झांसी ।

एम्० वी० शास्त्री मंगलौर ।

कविराज कुमुदमोहन राय ।

अष्टमः प्रस्तावः ।

अद्यापि भारतीयानामधिकोंऽशः सर्वदा आयुर्वैदिकचिकित्सयैव चिकित्सतः स्वास्थ्यमश्नुते, विहारप्रान्तप्रभुभिरपि विदितमेवैतत् । अत एव सम्मेलनमेतद्विहारप्रभूननुरुन्धद् विज्ञापयति, यत् तैः स्वकीयाधिकृतसंस्थासु (म्युनिसिपलिटी और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डोंमें) स्वतन्त्राणि उत वा चिकित्सालयेष्वेव (अस्पतालोंमें ही) आयुर्वेदीयभेषजदानस्थानानि प्रकल्पनीयानि, किंवा तत्र तत्र स्वतन्त्राणां भिषजां नियुक्तिश्चिकित्सायै विधातव्या ।

प्रस्तावकः—पं० जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी अहमदाबाद ।
अनुमोदकाः—कविराज यामिनीरंजन काव्यतीर्थ ।
पं० गङ्गाधर शास्त्री जोशी पूना ।
कविराज कालीभूषण कलकत्ता ।

नवमः प्रस्तावः ।

आयुर्वेदीयानां नामरूपादिना संदिग्धानां भेषजद्रव्यानां निर्णयोऽवश्यं विधातव्यः । इत्यतः सम्मेलनमेतत् तत्कार्यसमुद्यमे यादवजी त्रिविक्रमजी आचार्य इत्यादिमहोदयान्मुम्बईवास्तव्यान्नियोजयति । आज्ञापयति च, तत्र तत्रस्थानां भारतीयानां भिषजां विपश्चितां सकाशादेकां सदिग्धद्रव्यसूचीं विनिर्माय आगामिनि सम्मेलने सा समुपस्थापयितव्येति ।

प्रस्तावकः—कविराज गणनाथ सेन ।
अनुमोदकाः—वैद्यरत्न पं० डॉ० गोपालाचार्लू मद्रास ।
पं० रामचन्द्र शर्मा गोकुल (मथुरा) ।
कविराज सतीशचन्द्र लाहिड़ी कलकत्ता ।
पं० वाल्मीकिप्रसाद राजवैद्य रीवां ।

दशमः प्रस्तावः ।

समस्ते भारते वर्षे आयुर्वेदविद्यापीठपाठक्रमेण सनियममष्टांगायुर्वेदशिक्षणायैकं महाविद्यालयम् आरोग्यशालां च स्थापयितुं महत्यावश्यकता । तत एव सर्वेऽपि सभ्याः सम्मेलनानुरोधेन स्वस्वप्रान्ते महाविद्यालयार्थमारोग्यशालार्थं च सम्भूय, परिषद् संस्थाप्य धनसंग्रहं कुर्वन्तु ।

प्रस्तावकः—वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लू मद्रास।
अनुमोदकाः—हरिगोविन्द जी हकीम हैदराबाद।
पं० ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर।
पं० सूर्यनारायण शर्मा इन्दौर।
कविराज हेमचन्द्र सेन काव्यतीर्थ।
पं० विश्वेश्वर मिश्र प्रयाग।

एकादशः प्रस्तावः

वैद्यसम्मेलनाज्ञया अहमदाबादवास्तव्याः जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी इत्युपाह्वा वैद्या वैद्यानामेकां (डाइरेक्टरीनाम) सूचीं संगृह्णन्ति, तदर्थं ज्ञापनीयाः प्रादेशिका मन्त्रिणः सम्मेलनसंबद्धसभाश्च, संगृहीतॄणां साहाय्यं सम्पादयितुम्।

प्रस्तावकः—रामचन्द्र शर्मा अलीगढ़।
अनुमोदकाः—कविराज ताराचरण चक्रवर्ती।
पं० शिवदत्त विद्याभूषण कलकत्ता।
कविराज कुंजनाथ मजुमदार।

द्वादशः प्रस्तावः।

सम्मेलनोद्देश्यानां विपुलप्रचाराय कार्यसौकर्याय च भिन्नप्रान्तेषु तत्तत्प्रान्तसम्मेलनानां महीयसी आवश्यकता। तानि च सम्मेलनानि तत्तत्प्रान्तेषु निखिलभारतीयसम्मेलनान्मासद्वयादर्वागेव कार्य्याणि। प्रान्तीयानां च वैद्यानामभिप्रायः सम्मेलनकर्तृभिर्महत्सम्मेलनकार्यालये तद्द्वारैव प्रेषणीयः।

प्रस्तावकः—सुधांशुभूषण काव्यतीर्थ ढाका।
अनुमोदकाः—पं० रामनारायण शास्त्री कलकत्ता।
वैद्यराज सरदारी लाल लाहौर।
पं० वामनशास्त्री दातार।
पं० रामावतार शर्मा दानापुर।
पं० हरिशंकर शर्मा अलीगढ़।
कविराज गिरीशचन्द्र काव्यतीर्थ
वाजितपुर (मैमनसिंह)

त्रयोदशः प्रस्तावः।

वैद्यसम्मेलनस्योद्देश्यानां कार्याणां च प्रचाराय सम्मेलनपत्रिका द्वैमासिकी कर्त्तव्या। तत्र च गीर्वाणावाण्या पत्रिकार्धमलंकर्त्तव्यम्। भिन्नभाषीयानि च कानिचन प्रान्तीयपत्राणि सम्मेलनस्य प्रांतीय मुखपत्राणि कर्त्तव्यानि। तत्रैषा व्यवस्था—आयुर्वेदविकासो बंगभाषायाम्, वैद्यकल्पतरुर्गुर्जरभाषायाम्, आयुर्वेदो महाराष्ट्रभाषायाम्, आयुर्वेदानाम तैलंगभाषायायाम्, देशोपकारक उर्दू भाषायाम्, वैद्यसिंधुश्च कर्णाटभाषायाम्। सम्बोध्यानि चैतानि पत्राणि यत् सम्मेलनकार्याणामायुर्वेदमहामंडलस्य सूचनाश्च स्वस्वपत्रे यथा समयं प्रकाशयन्तु, ददन्तु चायुर्वेदोयान्दोलने सम्मेलनाय साहाय्यम्।

प्रस्तावकः—पं० कृष्णशास्त्री कवड़े बी० ए०

अनुमोदकाः—सुरेन्द्र चन्द्रसेन नागाँव राजशाही।
कविराजनरेन्द्रचन्द्र भिषग्रत्न ढाका।
श्यामसुन्दराचार्य काशी।
कविराज मनमोहन सेन कविरत्न ढाका।

चतुर्द्दशः प्रस्तावः।

भारते सर्वेषामेव प्रान्तानामेकमेव आयुर्वेदीयं मानं भवेत्तदा श्रेयः। अतस्तन्मानानुसारमेव नूतमानविधाने प्रयतितव्यम्। एतदर्थं निम्नांकितानां महोदयानां विचारपरिषदं निर्माय तद्द्वारा तत्तत्प्रान्तीयवैद्यानां सम्मतिपुरःसरं परिषत्सभ्यानां सम्मतिः संग्राह्या। सर्वसम्मतिसंशुद्धं किमपिमानमायुर्वेदमहामण्डलेन विनिश्चित्यागामिनि वत्सरे सम्मेलने समुपस्थापनीयम्।

विचारपरिषदः सभ्याः।

पं० लक्ष्मीरामजी स्वामी जयपुर।
डा० सुब्रह्मण्य अय्यर मद्रास।
पं० डी० गोपालाचार्लू मद्रास।
पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्य बम्बई।
पं० जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी अहमदाबाद।
पं० कृष्ण शास्त्री कवड़े बी०ए० पूना।

पं० गोविन्द प्रसाद शास्त्री जबलपुर ।
पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा प्रयाग ।
पं० ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर ।
पं० रामावतार शर्मा दानापुर ।
पं० क्षमापति वाजपेयी लखनऊ ।
वैद्यरत्न पं० परमेश्वरम् मलाबार ।
कविराज—प्रेमचन्द्र सेन काव्यतीर्थ ढाका
,, योगीन्द्रनाथ सेन कलकत्ता ।
,, गणनाथ सेन कलकत्ता ।

पञ्चदशः प्रस्तावः ।

सम्मेलनस्य विद्यापीठस्य च नियमानां संशोधनमावश्यकम् । अतः सम्मेलनमेतत् निम्नांकितनाम्नां सभ्यानामेकामुपसभां निश्चिनोति, तन्मंत्रिणं च सूचयति । यत् आयुर्वेदमहामण्डलमन्त्रिद्वारा महामण्डलसभ्यानां सम्मतिग्रहणपुरस्सरं नियमान् संशोध्य स्वोपसभासभ्यैस्सह पत्रद्वारा सम्मतिंगृहीत्वा आगामिनि सम्मेलने च साक्षात्कारेपासम्मत्या सम्मेलनदिनद्वयात्प्रागेव च विनिश्चत्य सम्मेलने संशोधिता नियमाः समुपस्थाप्याः ।

नियम—संशोधिनी सभायाः सभ्याः—

१—कविराज गणनाथ सेन एम्० ए० ।
२— ,, योगीन्द्रनाथ सेन एम० ए०
३—वैद्यरत्न डी० गोपालाचार्लू ।
४—पं० ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर ।
५—पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ।
६—प० यादवजी त्रीकमजी आचार्य ।
७—प० कृष्णशास्त्री कवडे बी० ए० ।
८—प० जटाशकर लीलाधर त्रिवेदी ।
९—पं० रामेश्वर मिश्र वैद्य कुलभूषण ।
१०—पं० लक्ष्मीरामजी स्वामी ।
११—कविराज ज्ञानेन्द्रनाथ सेन बी० ए० ।
१२—पं० गोविन्द प्रसाद शास्त्री ।

१३—श्यामसुन्दराचार्य वैश्य ।
१४—क्षमापति वाजपेयी ।
१५—कविराज सुधांशुभूषण काव्यतीर्थ ।
१६—पं० रामनारायण शास्त्री कलिकानां ।
प्रस्तावकः—पं० रामचन्द्र शर्मा गोकुल ।
अनुमोदकः—पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा प्रयाग ।
समर्थकः—प० रामनारायणशास्त्री कालिकानां ।

सम्मेलनपर सम्मति ।

कलकत्तेके षष्ठ वैद्यसम्मेलनपर निम्न लिखित सम्मतिसमाचार-पत्रोंमें देखी गई है ।

भारतोदय [ले. ठाकुर कल्याणसिंह वैद्य अजमेर] फालगुण शुक्ल ८

वैद्यसम्मेलनके वैद्योंको कलकत्तेके प्रसिद्ध कविराज श्यामादास वाचस्पति महोदयने एटहोमदेनेके समय जो वैद्योंके विनोदार्थ गायनवाद्य आदि कराया था उसका जिक्र करते हुए "मास्टर मदनके कण्ठस्वरकी क्या तारीफ करूं ! कोकिलाके स्वरको मात करनेवाला बालकका स्वर और फिर गलेमें तान और उपजकी मानों फिरकी लगी हुई, ऊंचा पटा हुआ हाल मानों गूंज उठा और प्रकृति निस्तब्ध हो मानों उसगानका रसास्वादन करने लगी, उस समय मानो हम इन्द्रपुरीमें पहुंच गये थे । " जलतरङ्ग आदिवाद्यके गानपर "ऐसा घनघोर गम्भीर मनोहर स्वरबँधा और उस बड़े हालमें ऐसा गूँजायमान हुआ कि कुछ कहा नहीं जाता । हमतो समझते हैं, अपने जीवनमें ऐसे गानका आनन्द फिर शायद न प्राप्त हो" "चौथेदिन सभामें श्री कविराज गणनाथ सेनजीका व्याख्यान हुआ । दो मेजोपर प्राचीन और अर्वाचीन दोनों प्रकारके यन्त्र-शस्त्र जोवैद्यकमें काम आते हैं सजाकर प्रत्येकको हाथमें लेकर आयुर्वेदिक और डाक्टरी लक्षणोंकी समालोचना करते हुए । यन्त्रों आदिकी बनावटके कार्य विषयमें बहुत ही उत्तमता पूर्वक व्याख्या की । इस व्याख्यानसे हमने बहुत लाभ उठाया और हमारे लिये यह बिलकुल नयी बात थी, सुश्रुतोक्त "बन्धनगमो बांधकर उन्होंने दिखाये और कई बन्धनोंके विषयमें कहा कि ये अभीतक डाक्टरीमें ईजाद नहीं हुए हैं । उसी दिन

नियमनिर्माण वितण्डाकी अमृतधाराने सभामें रसभङ्ग कर दिया यह नियम वितण्डाकी शुष्कधारा कोई तीन घण्टेतक बराबर बहती रही; जिसने सभाजन शून्य कर दी, कोई पन्द्रह बीस आदमी बैठे रह गये। गरज़ बहुत कुछ देखा और हमारी यह यात्रा बहुत कुछ ज्ञान सम्पादन कानेका हेतु हुई। आयुर्वैदिक प्रदर्शिनी भी अच्छो हुई थी; उससे भी बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ।

वीरभारत १२ जनवरी १९१५

"सभापतिके चेहरेसे दबङ्गता और विद्वत्ता टपक रही थी सुसज्जित अधिवेशन मण्डपमें यथेष्ट भीड़ थी। प्रबन्ध जरा और अच्छा होना चाहिये था। पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्लके सिवाय सबलोग अपने ही रङ्गमें मस्त थे।

कलकत्ता समाचार ६ जनवरी १९१५

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वागतकारणीके सञ्चालकोंके साथ स्थानीय जिन कुछ कविराजोंका वैमनस्य हो गया था वह स्थायी समितिके मन्त्री पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल और आयुर्वेदीय ग्रन्थमालाके सम्पादक पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्यके परिश्रमसे गया। अब सबके सम्मिलित होने से वैद्य-सम्मेलन वास्तविक सम्मेलन होगा।

सम्मेलनमें सभी प्रान्तोंके नगरोंसे आये हुए प्रतिनिधि, स्थानीय सारे कविराज वैद्य एवं कलकत्तेकी समस्त विभूति उपस्थति थी। आयुर्वेदविरोधियोंके चित्तमें भी सम्मेलनके ठाठ और जनउपस्थितिको देखकर अयुर्वेदका अनुराग स्वतः उत्पन्न होता था।

भारतमित्र १४ जनवरी

'इस वर्ष उत्साह अच्छा रहा। बाहरसे आये हुए प्रतिनिधियोंकी संख्या भी अधिक रही। पहले और दूसरे दिन दर्शकोंकी भीड़ भी खूब थी। कार्य बड़े ही उत्साहसे हुआ। यदि तीसरे दिन निबन्ध पाठमें अधिक समय न लगा दिया जाता तो अधिकांश श्रोता उकताकर चले न गये होते। उसी प्रकार अपील रविवारको होती तो परिणाम बहुत ही अच्छा होता; पर न मालूम क्यों ऐसा नहीं किया गया मङ्गलवारको उस समय अपील की गयी अब

नियमावलीके संशोधनका अनन्तवाद चलरहा था तथा सभी बोल तो रहे थे पर सुनता कोई नहीं था; और इससे घबराकर अधिकांश सज्जन सभासे उठ गये थे। इसका फल भी वही हुआ जो होना चाहिये। पर अब प्रश्न यह है कि बिना पैसेके मन्त्री एक वर्ष तक आयुर्वेद महामण्डलका कार्य कैसे चलावेंगे। हमको पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्लसे मालूम हुआ है कि इसकेलिये अन्ततः दो हज़ार रुपयोंकी आवश्यकता है। यह बड़ी रकम कहांसे आवेगी?

सम्मेलन अथवा आयुर्वेद महामण्डलके सञ्चालकोंको निन्दा करने अथवा उन्हें निरुत्साह करनेके लिये हमने यह नहीं लिखा है; पर कार्यकी त्रुटि जान कर भविष्यतमें वे उसे सुधारें तथा उनके कठिन परिश्रमके अनुसार ही कार्यमें सफलता प्राप्त हो यही इस लेखका उद्देश्य है। हमारे मतसे सम्मेलनके कार्य क्रममें परिवर्तन होनेकी आवश्यकता है। सम्मेलन प्रायः चार दिन हुआ करता है। पहले दिन तो वही होना चाहिये जो आजकल होता है। दूसरे दिन प्रस्ताव स्वीकृत हो जायं। उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको पारितोषिक दिये जायं तथा और भी इसी श्रेणीका कोई कार्य हो तो किया जाय। तीसरे दिन दो तीन निबन्ध पढ़े जायँ और वैद्यकके विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हों। व्याख्याता वृद्ध,अनुभवी तथा विद्वान वैद्य ही हों और व्याख्यान जहांतक हो सके सप्रयोग हुआ करें। वैद्यकके किसी विषयपर बालकों और युवकोंके व्याख्यान कदापि न होने पावें। अवश्य ही कभी कभी एकआध युवक भी सर्वगुण सम्पन्न मिल जाता है। ऐसे अपवाद सभी नियमोंके होते हैं तथा ऐसे अवसरपर नियम भङ्ग करनेमें कोई दोष नहीं है। पर साधारणतः वैद्यक जैसे विषय पर बोलनेका अधिकार केवल अनुभवी वैद्यको ही है; क्योंकि आयुर्वेदका मूल ही अनुभव है।·········जिन्होंने वैद्यक शास्त्रका अध्ययन किया है ऐसे युवकोंको सम्मेलनमें अनुभवी वैद्योंकी बातें सादर सुननी और उनसे लाभ उठाना चाहिये। उन्हें सम्मेलनके बाद भी समागत वृद्ध वैद्योंसे वार्तालाप कर अभिज्ञता लाभ करनी चाहिये। जब वैद्य इस कथनके अनुसार करने लगेंगे तभी सम्मेलनका प्रकृत उद्देश्य सिद्ध होगा।

निबन्धोंके विषयमें भो यही कहना है। साधारण बालकों और युवकोंके सम्मुख ब्रह्मचर्यका महत्व वर्णन करना उचित है। पर वृद्ध, अनुभवी, सदाचार सम्पन्न वैद्योंके सामने एकके बाद एक असंख्य बालक और रँगीले युवक ब्रह्मचर्यका महत्व गावें इससे बढ़कर उपहास्य दृश्य, संसारमें और कौनसा हो सकता है? जिन निबन्धोंको विद्यार्थीपाठ्य स्वल्पमूल्य मासिकपत्रोंमें ही अवश्य ही सम्पादक द्वारा सुधारे जाने पर स्थान मिल सकता है, उनका वैद्यसम्मेलनमें पढ़ा जाना अनुचित ही नहीं, पर निन्दनीय भी है।... इन निबन्धोंके वार्षिक विवरणमें छपनेके बाद आर्य-वैद्यककी कितनी उन्नति होगी? प्रति वर्ष विचारके लिये एक ही विषय अथवा रोग निश्चय किया जाय और उसपर भिन्न भिन्न प्रदेशोंके अल्पसंख्यक अनुभवी वैद्योंसे प्रार्थना कर-अवसर पर कुछ दक्षिणा अर्पण करके भी उत्तम निबन्ध लिखाने चाहिये। निबन्धपाठके बाद इन्हीं विषयों पर खण्डन मण्डनात्मक बाद दो दिन तक प्रेम तथा शान्तिपूर्वक और सत्य जाननेकी इच्छासे ही होना चाहिये। इसीका समाधान अन्तिम दिन सभापतिको अपने अन्तिम अभिभाषणमें कर "मधुरेण समापयेत्" नीतिकी रक्षा करनी चाहिये।...

"सर्वारम्भास्तण्डुलाः प्रस्थमूलाः" इसलिये धनकी अपील प्रति वर्ष अच्छे प्रभावशाली वक्ता द्वारा होना चाहिये। इसके लिये दिन और समय पहलेसे निर्धारित करना असम्भव है। यह काम स्वागतकारिणीका है। सभामें अपील करनेके पहले कतिपय, धनी और प्रभावशाली व्यक्तियोंसे मिलकर उनसे चन्दा लिखवाना, उनको अपीलके समय सभामें उपस्थित करना तथा अपील समाप्त होते ही जिसमें कई व्यक्ति उसी समय रुपया दे दें इसका प्रबन्ध करना इत्यादि कार्य ऐसे हैं, जिनका अनुभव उन सबको है जो सर्वसाधारणसे द्रव्य संग्रह कर कोई कार्य करते हैं। इसके लिये विशेष चेष्टा अपेक्षित है। इस वर्ष यहां इस प्रकारका प्रयत्न कहां तक किया गया था यह कविराज योगीन्द्रनाथ सेन तथा उनके सहायक ही जानते हैं। पर फल कलकत्तेके लिये निन्दा जनक हुआ इसमें सन्देह नहीं, जो कलकत्ता धनी मानी और विद्यारुचि सम्पन्न पुरुषोंसे भरा है, जहां उत्तम कविराजोंकी संख्या भी कम नहीं है

इस विपरीत समयमें भी जहां पूतनामा कविराज गङ्गाधर सेन और उनके सुयोग्य शिष्योंने आयुर्वेदके महत्वसे केवल भ्रान्त भारतीयोंको ही नहीं पर अहम्मन्य यूरोपियनोंको भी मुग्ध कर लिया था उसी कलकत्ता नगरसे आयुर्वेदमहामण्डलको रिक्त हस्त परावृत होना पड़ा, इससे बढ़कर लज्जाका विषय और कौन सा हो सकता है। अस्तु, "गतं न शोचयेत्"। भविष्यतके लिये सावधान होना ही कर्तव्य है।

विहारी १३ जनवरी १९१५

"कलकत्तेमें छठे वैद्यसम्मेलनका अधिवेशन बड़े उत्साहके साथ समाप्त हुआ। यद्यपि बङ्गालके कविराज लोग और इधर अर्थात् विहार, संयुक्तप्रदेश और पञ्जावके वैद्य लोग एक ही शास्त्र आयुर्वेदके अनुसार चिकित्सा करते हैं पर दोनोंमें अब तक बहुत अन्तर चला आता था। कविराज लोग वैद्योंको अपनी बराबरी कौन कहे अपने व्यवसायकी निम्न श्रेणीमें भी नहीं गिनते। इसलिये खास कलकत्तेमें भी जो कविराज हैं वे वहांके वैद्योंको बहुत निम्न दृष्टिसे देखा करते हैं। इस बार सम्मेलन कलकत्तेमें पहुँचा है उससे बहुत लाभ होनेकी सम्भावना है। पहला अच्छा कार्य उसके द्वारा यही हुआ है कि उसके द्वारा समस्त वैद्योंका एक परस्पर सम्मिलन हो गया है। हम वैद्यसम्मेलनके साथ पूर्ण सहानुभूति रखते हैं और आशा करते हैं कि इसकी सदा उन्नति होती रहे।

केसरी २६ जनवरी १९१५

इस वर्ष सम्मेलनकी तिथियां ऐन समयमें बदलनेसे वैद्योंको बहुत असुविधा हुई और इस विषयकी चिन्ता होने लगी कि सम्मेलन कैसे सफल होता है। परन्तु भारतवर्षके वैद्योंके अपूर्व उत्साहसे और कलकत्तेके कविराजोंके अविश्रान्त श्रमसे छठा वैद्यसम्मेलन बड़े ठाठसे हुआ।.........सम्मेलनके लिये आये हुए प्रतिनिधियोंकी व्यवस्था स्वागतकारिणी समितिने बहुत अच्छी रखी।

हिन्दी बङ्गवासी १८ जनवरी १९१५

"बीजसे वटवृक्ष तैयार हुआ है। इस बार आयुर्वेद सभा बहुत कुछ हृष्टपुष्ट हो गयी। इस बार कलकत्तेमें इसका छठा अधि-

वेशन हुआ। इस सभाकी आलोच्यचर्चा कङ्गरसकी आलोच्य-चर्चासे स्वतन्त्र है सही; किन्तु बनावट सजावट कङ्गरस जैसी ही है। ऐसी दशामें इस सभाका अधिक परिचय देनेका प्रयोजन नहीं। बम्बई अञ्चलमें इस सभाकी सृष्टि हुई। बम्बईवासी इसके सृष्टा हैं। पहले वर्ष इसकी कोई स्थायीसमिति न थी। इसलिये अन्य स्थानोंसे इसका कोई सम्पर्क न था; और एक वर्ष इसी तरह बीत गया। तीसरे वर्ष स्थायीसमितिकी प्रतिष्ठा हुई। भारतके नाना स्थानोंके प्रतिनिधियोंको इस सभामें आसन मिला। इसका नाम हुआ "निखिल भारत वैद्यसम्मेलन"। इस बार कलकत्तेमें इसका अधिवेशन हुआ है।.........इस बार इस सभामें आयुर्वेदकी महिमा अच्छी तरह प्रकट हुई। श्रुतिसुखकी अवधि न थी। आशा है इस श्रुतिसुखका फल प्रकट होगा।"

गृहस्थ फाल्गुन १३२१ (१९७१)

"सभापतिने अपने पाण्डित्यपूर्ण अभिभाषणमें अनेक कामकी बातें कहीं। आत्मश्लाघा गम्भीर आशा और उत्साह भाषणकी पंक्ति पंक्तिमें फूट रहा था। भारतवर्षके नाना देशसे अनेक आयुर्वेद व्यवसायी प्रतिनिध आये थे। कुछ करना होगा, पुरानेको नयेसे मिलाकर उसे बलवान किये बिना काम नहीं चलेगा, यही इस सम्मेलनके भीतरकी सत्य बात है। वर्तमानके अस्तित्व सङ्कटमें जब बाहरी आक्रमण क्रमशः प्रचण्ड हो रहा है तब हमारी जहां पर जो शक्ति सञ्चित है, उसे रक्षित रख पुष्ट करना होगा। हमारी सनातन भित्तिके ऊपर बाहरी माल मसाला संग्रह कर इमारत तैयार करनी होगी। किन्तु यह कार्य किसी एकके लिये साध्य नहीं है। इसीलिये आज चारों ओरसे गुट्ट बांधनेका आयोजन हो रहा है और इसीलिये गुट्ट बांधना ही आजकल सर्वत्र सिद्धिका प्राण स्वरूप है।"

आयुर्वेद रहस्यार्क फाल्गुन १९७१

सम्मेलनकी तिथि बदलनेसे उसकी सफलतामें सन्देह हो रहा था; परन्तु वैद्योंको अड़चन भोगने पर भी स्वागतकारिणीके परिश्रमसे सम्मेलन सफलता पूर्वक हो गया।

हिन्दी वैद्यकल्पतरु दिसम्बर १९१४

आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये स्थायी रूपसे कार्य करनेवाली स्थायीसमिति आयुर्वेदमहामण्डलको हमें और भी प्रभावशाली बनाना चाहिये। हम देख रहे हैं कि गत तीन वर्षोंसे आयुर्वेदमहामण्डलके मन्त्री पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल अपने समस्त कार्योंको और सुखोंको तिलाञ्जलि देकर आयुर्वेदमहामण्डलकी शक्तिको बढ़ानेके लिये जी जानसे परिश्रम कर रहे हैं। हम आयुर्वेदमहामण्डलके मेम्बर और गुजरात प्रान्तके मन्त्री हैं। हमारे पास वर्षमें कई पत्र आयुर्वेदमहामण्डलके कार्य सम्बन्धी आते हैं। इसी प्रकार उन्हें हर एक आयुर्वेदमहामण्डलके मेम्बर और प्रान्तीय मन्त्रियोंसे पत्र व्यवहार करना पड़ता होगा। इसके सिवाय उन्हें आयुर्वेद सभाओंको पाठशालाओंको तथा आयुर्वेद सम्बन्धी देशकी सार्वजनिक संस्थाओंको योग्यसूचनाएँ और सलाह देनी पड़ती हैं। उन्हें स्वीकृत प्रस्तावोंके अनुसार सदैव कुछ न कुछ कार्य करना पड़ता है, कहां तक कहें आयुर्वेदमहामण्डलके यावत कार्य उन्हें करने पड़ते हैं। एक कौड़ी भी न लेकर इस प्रकार आयुर्वेदकी सेवा करनेवाले आपमेंसे और कितने निकल सकते हैं? कहनेका मतलब यह है कि शुक्ल जी सब प्रकारसे आयुर्वेदकी सेवा करनेको तैयार हैं और वे सब प्रकारसे योग्य भी हैं; किन्तु उनकी सहायताके लिये उनके बताये हुए कार्योंको करनेके लिये कमसे कम एक अच्छे सहकारी मन्त्रीकी आवश्यकता है। सहकारी मन्त्री जहां तक सम्भव हो वैतनिक होनेसे ही कार्य ठीक हो सकता है। हमारे विचारके अनुसार इस समय कमसे कम १००) रुपये मासिक एक सहकारी मन्त्री, एक क्लर्क और एक चपरासीके वेतनके लिये चाहिये और कमसे कम १००) छपाई पोस्टेज आदिके लिये चाहिये। जब तक आयुर्वेदमहामण्डलके प्रधान कार्यालयको २००) मासिक खर्च करनेकी अनुकूलता न हो तब तक जैसा हम चाहते हैं वैसा मण्डल-कार्य नहीं कर सकता।.........हमें आशा ही नहीं विश्वास है किन्तु विश्वास है कि स्वागतकारिणी समितिके और आयुर्वेदमहामण्डलके सञ्चालक इस विषय पर अच्छी तरहसे विचार कर योग्य प्रबन्ध करेंगे।

वैद्य जनवरी १६१५

"...कलकत्तेके कविराजोंकी धड़ाबन्दीसे पहले भय हुआ था कि सम्मेलन कहीं बिलकुल फीका न रह जाय। पर कुछ सज्जनोंके विशेष उद्योगसे सम्मेलनके समय सब दलोंके लोग परस्पर मिल गये थे। इसलिये सम्मेलनका उत्सव बहुत ही बढ़िया हो गया।... सम्मेलनके पांच उत्सव हो चुके हैं, यह छठा भी हो गया; परन्तु आज तक भी सम्मेलन ऐसा कोई कार्य न कर सका कि जिससे आयुर्वेदकी वास्तविक उन्नति होनेकी आशा की जाय। हमें अबकी बार बहुत आशा थी कि जब कलकत्तेमें सम्मेलन होना स्थिर हुआ है तब अवश्य ही किसी न किसी स्थायी कार्यकी नीव पड़ जायगी। पर हमारी यह आशा निरी निराशा निकली* यद्यपि कुछ न होनेसे २। ४ दिन व्याख्यानोंकी धूमधाम और प्रस्तावोंकी प्रदर्शिनी भी अच्छी चीज़ है; पर इस प्रकार कब तक काम चल सकता है। बड़ी बड़ी सभाओंकी तरह वर्ष भरमें केवल ३। ४ दिन आयुर्वेदके कोरे गीत गा लेनेसे ही आयुर्वेदका किस प्रकार उद्धार होगा?

अबके वैद्यसम्मेलनमें जैसा चन्दा होना चाहिये था वैसा तो क्या उससे आधा भी सम्मेलनके कार्यकर्त्ताओंकी भूलसे नहीं हुआ। जो कलकत्ता धनीमानी और विद्वान कविराजोंका केन्द्र या वैद्योंकी विलायत समझा जाता है उसमें आयुर्वेदमहामण्डलको खाली हाथों लैाटना पड़ा इससे अधिक और क्या लज्जाका विषय हो सकता है।......सम्मेलनमें जो व्याख्यान हुए उन सबमें कविराज गणनाथ सेन जीका व्याख्यान बढ़िया और विशेष प्रभावोत्पादक रहा। वैद्य-सम्मेलनमें ऐसे आयुर्वेद-व्याख्याताओंकी बड़ी आवश्यकता है।

मरवाड़ी माघ कृष्ण १२ सं० १६७१

"...भारतीय वैद्योंका यह एक मात्र उच्चकोटिका सम्मेलन कुछ वर्षोंसे हरसाल भारत वर्षके भिन्न भिन्न भागोंमें हुआ करता है।

*यदि आप अपने आशानुरूप किसी कार्यका उल्लेख विस्तार सहित कर दें तो उत्तम होगा। साथ ही यह भी बतला दें कि वह कार्य किस क्रमसे किन किन उपायों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। ऐसा होनेसे उस पर विचार करनेमें सुविधा होगी। —सम्पादक

आरोग्यसिन्धु नवम्बर १६१४ प्रकाशित मार्च १६१५

"...जैसी आशा थी, कलकत्ताकी जैसी ख्याति थी, कविराजोंकी जैसी बात थी, उसके देखे इस छठे वैद्यसम्मेलनमें सफलता प्राप्त नहीं हुई।... ...बातूनी जमा खर्चके सिवाय काम क्या हुआ ? आयुर्वेदमहामण्डलके प्रभाव शाली सस्था बनानेके लिये कौनसा प्रयत्न हुआ ! हम कविराजोंसे राजित, मारवाड़ी वङ्गीय-धनिकोंसे प्रकाशित कलकत्ता नगरमें कोई विलक्षण कार्य होगा, ऐसी धुन लगाये हुए थे। परन्तु चार दिनाकी चांदनी फिर अन्धेरीरात, कहावतके समान "यह होना चाहिये, वह होना चाहिये, कह कर वैद्योंने चार दिन अपना टिमटिमाता हुआ दीपक जलाया और फिर उसी अन्धकारमें लीन हो गये। जिस कलकत्ता नगरसे अनेक संस्थाएं लाखों रुपया दान लेजाती हैं जिस कलकत्ता नगरमें कविराजोंके सैनसे (इशारेसे) बङ्गाली धनाढ्य और मारवाड़ी धनिक किसी उपयोगी कार्य करनेको लाखों रुपये दे सकते हैं, जिस कलकतामें प्रतिदिन सैकड़ों रुपये पाकेटमें भरने वाले और हज़ारों रुपयोंकी औषधियां बेचने वाले शिर ऊंचा करते हुए भारत भरके वैद्योंके शिरोमणि कहानेवाले लक्षाधीश कविराज विराजमान हैं, वहां सम्मेलनमें सम्मिलित शक्तिने आयुर्वेदमहामण्डलके लिये "डेढ़सौ रुपिल्ली" इकट्ठी करके अपनी निस्स्वारथा, उदारताका कैसा अच्छा नमूना दिखा दिया ? इन डेढ़सौ रुपयोंसे मालामाल हो महामण्डल भारतवर्षीय वैद्योंकी सम्पूर्ण आशाओंको पूरा कर देगा, विद्यालय खोल देगा, व्याख्यानशाला बना देगा, और सालभर तक अपना कार्य चलाता रहेगा, हमको क्या सम्पूर्ण भारतीय वैद्योंको वङ्गसे वैद्यसम्मेलनको निराश हो लौटते देख बड़ा पश्चात्ताप है।......स्वागत कारिणी समितियां सम्मेलनकी नावको चक्करमें डाल देती हैं सम्मेलनके उत्सवसे पहले उसको अपने डूबनेकी चिन्ता घेर लेती है।......अबकी बार ऐसी धारणा नहीं थी; क्योंकि कलिकात्ता नगरके विद्वान वैद्योंमें वैमनस्य, अहंकार और मानकी लोलुपता होगी तो फिर दूसरी जगहके कम तजुर्बेकार, सभा-सोसायटी करनेका ढङ्ग न जाननेवाले वैद्य किसका अनुकरण करेंगे ऐसे विचार वैद्य-मण्डलीके थे। किन्तु यहां भी इन दुर्गुणोंकी

दाल गल ही गयी। बङ्गीय वैद्योंने दूसरोंके घर आदर पाया था, मानका पान किया था, इससे अपने घर आये हुए पाहुनोंके लिये आदर देते और मिलजुलकर उनको सन्तुष्ट कर देते, तो इसमें ही उनकी प्रशसा थी। सुना जाता है कि सम्मेलन श्रीमान् गणनाथ सेनजीकी सहनशीलता निस्वार्थतासे जैसे तैसे हुआ। स्वागतकारिणी सभाके सभापति बननेके लिये बड़ी दौड़धूप हुई। यहां भी बहुतसे कविराज सम्मेलनको छोड़ भागे और बड़े बड़े वैद्योंके समझानेसे बड़ी कठिनतासे समझे।······श्रीमान सभापतिजीका भाषण योग्यता पूर्ण हुआ। जैसे आप विद्वान और आयुर्वेदशास्त्रके अध्यापक हैं; तदनुसार ही उनका भाषण भी शास्त्रीय है। इस भाषणसे ही आयुर्वेदशास्त्रोंके अनेक सिद्धान्तों का ज्ञान होता है।

प्रताप १८ जनवरी १९१५

"···मिस्टर कृष्णस्वामी द्वारा उपस्थित किये सरकार द्वारा आयुर्वेदको उत्तेजना देनेके प्रस्तावके प्रतिवादमें सरकारकी ओरसे जो अवज्ञासूचक शब्द कहे गये थे उनके प्रतिवादपर खूब चखचख रही। अन्तमें पण्डित डी, गोपालाचार्लूके यह कहने पर कि इस प्रस्तावको मद्रास सरकारने अभी नामंजूर नहीं किया है। लोग प्रस्तावके मूल उद्देश्य "अवज्ञासूचक" शब्दको भूल गये और प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया। एक दूसरेके भिन्न प्रान्तके लोगोंसे मिलनेके कारण सहानुभूति उत्पन्न हुई और सम्मेलनमें भिन्नप्रान्तोंके जितने वैद्योंने व्याख्यान दिये करीब करीब वे सभी हिन्दीमें बोले।

मिथिलामिहिर १६ जनवरी १९१५

प्रदर्शिनी खोलते समय कलकत्ता हाईकोर्टके चीफजस्टिसने आयुर्वेदशास्त्रकी बड़ी प्रशंसा की।

वैद्यकपत्रिका २८ जनवरी १९१५

(संस्कृत कालेजोंमें आयुर्वेदकी शिक्षा देनेके प्रस्तावपर)...... सरकारी संस्कृत शालाओंमें अन्य विषय शिखाये जाते हैं तब वही लाभ वैद्यक विषयको क्यों न मिले, ऐसा मालूम होना साहजिक है; परन्तु यदि वैद्यक विषयकी व्यापकता हृदयमें लावें तो अन्तमें

यह ध्यानमें आवेगा कि संस्कृत कालेजोंमें इसकी शिक्षा होना सम्भव नहीं । कुछ लोग कहेंगे कि "जैसा मिले वैसा ही सही, कुछ भी न होनेसे जो मिले समाधान मानना चाहिये।" उपयुक्तता की दृष्टसे विचार किया जाय तो दिखाई पड़ेगा कि ऐसी शिक्षा बहुत ही अपूर्ण होगी ।

आयुर्वेद माघ शक १८३६ सं० १९७१

......स्वागतकारिणीके सभापतिने स्वागत करते हुए बङ्गाल-प्रान्तके वैद्यकका इतिहास दिया; परन्तु इस बातका उल्लेख भी नहीं किया कि सद्यस्थितिमें वैद्य लोगोंको सम्मेलनमें किस विषय-की चर्चा अवश्य करनी चाहिये ।

सभापति पण्डित श्रीलक्ष्मीराम स्वामीका भाषण ऐसा हुआ जैसा अखिल भारतवर्षीय सम्मेलनके सभापतिको शोभा दे। सकल आयुर्वेद महोदधिका आलोडनकर उसका सारभाग पण्डित जीने अपने भाषणमें ला रखा था। यदि सभापतिके भाषणमें बङ्गाली लोगोंकी "अहोरूपं अहोध्वनिः" न्यायके अनुसार अतिशय स्तुति न होती, सर्वसाधरण डाक्टर लोगोंको "दक्षतर" कहकर वैद्योंकी अपेक्षा "तर" प्रत्यय लाकर उन्हें श्रेष्ठ ध्वनित न किया गया होता और आधुनिक पाश्चात्य आयुर्वेदीय ज्ञान स्वीकार न करने वाले भारतवर्षीय वैद्योंको दूषण न दिया होता तो सभापति-का भाषण सर्वतोपरि ग्राह्य हुआ होता ।

प्रस्तावोंमें औषधिपरिचय सम्बन्धी प्रस्ताव अत्यन्त महत्वका है। शेषकार्यग्राहक "अष्टाङ्ग आयुर्वेद पाठशालाका" प्रस्ताव है; परन्तु वह कागज़ी प्रस्ताव हुआ। प्रश्न है कि अष्टाङ्ग आयुर्वेदपाठशाला-को मूर्तस्वरूप आवे कैसे? कविराज गणनाथसेन अभी एक वर्ष पाठ-शाला बनानेके लिये तैयार नहीं; वैद्यरत्न योगीन्द्रनाथ सेन पाठ-शालाकी ओर दुर्लक्ष करते हैं (क्योंकि इस प्रस्तावके समय आप सम्मेलनमेंभी उपस्थित नहीं हुए थे।) जयपुर मद्रास और यू० पी० वाले समझते हैं कि कलकत्तेमेंही उक्त कविराजोंके उद्योग किये बिना पाठशाला स्थापित होना असम्भव है। दिल्लीमें तिब्बी कानफरेंस-के द्वारा ऐसा प्रयत्न हो रहा है और वह सफल होने पर ही है

(क्योंकि वाइसरायने उसकी इमारतका पत्थर रख दिया है और स्वामी लक्ष्मीरामके एक शिष्य उसमें अध्यापकका काम करते भी हैं) यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि वैद्यसम्मेलनके चालकोंको यह क्यों मालूम पड़ता है कि कलकत्तेके कविराजोंके बिना हम ऐसी पाठशाला करनेमें असमर्थ हैं। पाठशालाका अस्तित्व नहीं, वह कैसी होगी इसका कोई मसविदा तैयार नहीं तौभी आश्चर्य है कि पाठशालाके लिये फण्ड इकट्ठा करनेको जल्दी की जाती है। जनताको कुछ प्रत्यक्ष काम दिखाये बिना केवल बातोंसे ऐसे प्रचण्ड कामके लिये फण्ड जमा होना सम्भव नहीं।.........हमारी समझमें तो चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो पाठशाला आरम्भ कर उसकी ओर जनताका लक्ष्य खींचकर और उसके स्वरूपकी नकशा दिखाकर मांगा जाय तो व्यर्थ नहीं होगा।

वैद्यभूषण अक्टूबर, नवम्बर १९१४

स्वागतकारिणी समितिके अध्यक्ष वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथसेन एम० ए० विद्याभूषण महोदयने प्रथम दिन अपना एक अत्युत्तम संस्कृत अभिभाषण सुनाया।······कई एक निबन्ध पढ़ेगये और वैद्यक विषयके व्याख्यान भी हुए जिनसे श्रोतागणोंको लाभ पहुँचा। सुनागया है कि अपील कुसमय करनेके कारण चन्दा कुछ भी नहीं हुआ। कलकत्ता जैसे नगरमें धनका संग्रह न होना सुनकर आश्चर्य होता है। यदि कुछ यत्न किया जाता तो पर्याप्त धनहो सकता था।······ हमें समझनहीं आती कि केवल वर्षके अनन्तर प्रायःउन्हीं प्रस्तावोंको बार बार पास करके क्या लाभहो सकता है। यदि एक महान आयुर्वेद कालेज-तथा आरोग्यशालाके स्थापन करनेके लिये उद्योग किया जाय तो भारतवर्षमें धनकी कमी नहीं।

वैद्यकल्पतरु जनवरी १९१५

इतिहासमें एक एक घटना खासा नोट करने योग्य और चिरस्मरणीय होती है। आयुर्वेदके इतिहासमें कलकत्ता वैद्यसम्मेलनका समारम्भ और उसकी पूर्णाहुति चिरस्मरणीय रहेगी। हम वैद्योंके इस छठे अधिवेशन कोइसलिये महत्व देते हैं किअबतक यह सम्मेलन कुछ प्रान्तोंका ही गिना जाता था। जबतक भारतवर्ष के सब भागों की उसमें सम्पूर्ण सहानुभूति अथवा सहायता न हो तब

तक उसे "अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन" नाम देनेमें हम हिचकते थे।.....कलकत्तेके कविराजोंने इस सम्मेलनको निमन्त्रित कर और उसके कार्यमें सहानुभूति और शामिलगीरी दिखाकर उसे राष्ट्रीयरूप दिया है। मद्रास भी अबतक अलग था। इस वर्ष मद्रास अहातेके वैद्योंने उसमें उपस्थित होकर ही नहीं किन्तु अगले वर्षके लिये उसे निमन्त्रण देकर उसमें सम्पूर्ण रूपसे शामिलगीरी दिखायी है।...हम हिन्दुस्थानके वैद्योंके इस छठे अधिवेशनको बहुत महत्व देते हैं और आजसे आयुर्वेदके पुनरुद्धारका प्रारम्भ हो चुका यह कहने में भी हम उतावली अथवा अतिशयोक्ति नहीं करते, ऐसी हमारे अन्तःकरणकी खातिरी है। वैद्योंके इस राष्ट्रीय सम्मेलन, इस महाभारत प्रयासका परिणाम भविष्यमें चाहे जैसा हो; परन्तु यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि आयुर्वेदके इतिहासमें आजसे नयायुग वर्ता है। ..इस छठे अधिवेशनके समय हमारे आसपास जो उत्साह, धूमधाम और आनन्दके आन्दोलन हो रहे हैं उन्हें देखकर हमारा शुद्ध और श्रद्धालु अन्तःकरण कहता है कि आयुर्वेदके पुनरुद्धारका सूर्योदय हो चुका है। इस विश्वासके लिये अश्रद्धालु और आलसी लोग हमें क्षमा करे।...दो वर्षसे सम्मेलनके आगे आयुर्वेदविद्यालयकी चर्चा होती थी परन्तु इस वर्ष इस महाभारत कामकेलिये सम्मेलनने एक कदम आगे बढ़ाया है। महाविद्यालयकी बातको बङ्गालके कविराजोंने लक्ष्यमें लिया है और कविराज गणनाथ सेनने इस कार्यके आरम्भ करने का भार सम्मेलनकेसामने आनन्दाश्रुके साथ शिरपर लिया है! हमें आशा है कि कविराज गणनाथ सेन तथा उनके बङ्गाली मित्र कविराज इस वचन को पाले बिना नहीं रहेंगे।

देशोपकारक १५ जनवरी और १ फरवरी सन् १९१५

तिथि बदलनेका कारण यह बतलाया जाता है कि ३ जनवरीका दिन राजेश्वरके वास्ते प्रार्थनाका दिन नियत हुआ है; परन्तु यह कारण कोई बड़ा कारण नहीं कहा जा सकता। हम भी प्रार्थना नियत पर करलेते या उस दिन चन्द घण्टोंके लिये कानफरेंस बन्द करके समय बढ़ाया जाता। वास्तविक बात यह थी कि कलकत्तेके वैद्योंमें आपसमें बहुत अनबन थी और अभी तक चन्दा भी पूरा नहीं हुआ था।" 'कलकत्ते जब हम पहुँचे तब वहां विचित्र वृत्तान्त

सुने। वह कविराज जिनसे डिगरियां लेने लोग आते हैं, वह जिनकी धाक सम्पूर्ण भारतवर्षमें बंधी हुई है, आपसमें लड़ रहे हैं। दो पार्टियां हुई थीं और अखबारोंके भीतर एक दूसरे पर इस प्रकारके आक्षेप होते थे कि न कहना ही भला है।........हमारी भी विचित्र दशा है कि जहां भी सम्मेलन होता है, प्रेम बढ़नेके स्थानमें झगड़े खड़े हो जाते हैं और उनका बड़ा कारण यह होता है कि अमुक मन्त्री क्यों हो गया, अमुक प्रधान क्यों हो गया, मैं क्यों न हुआ, हमारा गुरु क्यों न हुआ, उसकी क्या योग्यता है, वह कलका बच्चा है। कविराज योगेन्द्रनाथसेन जैसे प्रसिद्ध और योग्य पुरुषके सम्बन्धमें भी ऐसी बातें हो सकती हैं तो किसी सभामें काम करनेवालेको समझ कर पग रखना चाहिये।

आयुर्वेद विकास पौष माघ १३२१ (१६७१)

इस मनोहर सम्मेलनमें आयुर्वेदके प्रति स्वभावतः एक अभूतपूर्व अनुराग और उत्साहका सञ्चार देखा गया। सम्मेलनके उपस्थित प्रतिनिधि, दर्शक, सभाकी सजावट उत्साह अनुराग प्रभृति देखकर आयुर्वेदके विरोधी लोगोंके चित्तमें भी आयुर्वेदके प्रति स्वतः अनुराग और भक्ति उत्पन्न हुई है।

विवादात्मक औषध।

अपने आयुर्वेदमें जो द्रव्य चिकित्सार्थ व्यवहृत होते हैं उनमेंसे बहुतसे द्रव्य संदिग्ध हैं अर्थात् बहुतसे द्रव्य ऐसे हैं कि, आयुर्वेदोक्त एक ही नामसे भिन्न भिन्न देशोंमें भिन्न भिन्न द्रव्य व्यवहृत हो रहे हैं। जैसा—ब्राह्मी, वृद्धदारु, जीवन्ती, रास्ना आदि इन द्रव्यों का निर्णय होना बहुत ही अवश्य करणीय है कि, इनमेंसे शास्त्रोक्त नामसे व्यवहार होने योग्य द्रव्य यही है। इस विषयके शोधनके लिये निम्न लिखित योजना नियत की गयी है।

प्रथम भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके वैद्योंसे प्रार्थना की जाय कि वे जिन जिन औषधोंको संदिग्ध समझते हों उनकी एक सूची बनाकर भेज दें। इस प्रकार भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे संदिग्ध औषधोंकी सूची आजाने पर इन सब सूचियोंकी सहायतासे

एक संदिग्ध औषधोंकी संपूर्ण सूची तैयार की जावे । फिर वह सूची और उसके साथ वनस्पति आदिके नमूने कैसे तैयार करके भेजने चाहियें उसका संपूर्ण विधि छपवाकर भारतवर्षके सब वैद्यमहोदयोंके पास भेजा जावे और प्रार्थना की जावे कि, उन उन नामोंसे अपने यहां व्यवहारमें आनेवाले द्रव्योंका नमूना भेज दें । इस प्रकार नमूनोंका संग्रह होनेके पीछे आयुर्वेदमहामण्डलकी संमतिसे एक कमिटी इस तरह की नियत की जावे कि, जिसमें दो वनस्पति तत्ववेत्ता (बोटेनिष्ट), दो वैद्य और एक ऐसे महोदय जो पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र और आयुर्वेद दोनोंका ज्ञान रखते हों ऐसे विद्वान् मौजूद हों । फिर वह कमिटी उन नमूनोंमेंसे शास्त्रोक्त नामसे व्यवहृत होने योग्य द्रव्य यही है ऐसा निर्णय करके उसको सर्वसंमत होनेके लिये वैद्यसम्मेलनके सामने रखे ।

इन कार्योंमेंसे संदिग्ध औषधोंकी संपूर्ण सूची तैयार करनी और उसे वैद्योंके पास भेज कर उनकी सहायतासे निर्णय करनेवाली कमिटीके लिये द्रव्योंके नमूनोंका संग्रह करना यह कार्य निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके कलकत्तेके अधिवेशनमें ६ प्रस्तावके अनुसार मेरे सुपुर्द किया गया है । अब आप वैद्यमहोदयोंसे आरम्भमें मेरी यही प्रार्थना है कि, आप जिन जिन औषधोंको संदिग्ध समझते हों उनकी एक सूची बना कर शीघ्र मेरे पास भेजनेकी कृपा करें । ताकि शीघ्र ही एक संपूर्ण सूची तैयार करके नमूनोंके भेजनेके लिये आपकी सेवामें भेजी जाय । मुझे पूर्ण आशा है कि सब वैद्यमहोदय इस कार्यको अपना परम कर्तव्य समझ कर इस कार्यमें मुझे सब प्रकारसे सहायता करेंगे ।

नं० ३७२, बोरा बजार स्ट्रीट, फोर्ट मुंबई

निवेदक—भवदीय विनीत सेवक
वै० यादवजी त्रीकमजी आचार्य ।

ब्राह्मीका पता ।

हमारे प्रान्तमें ब्राह्मीका उपयोग—और वह भी भयानक अवस्थामें—अधिक किया जाता है। कई धनाढ्य—उपकारकी दृष्टिसे तात्कालिक सहायता Elementry aids के लिये हर कोईको बिना कुछ मूल्य लिये, अपने यहां 'बादि' तथा शीतके उपचारार्थ 'ब्राह्मीकी गोलियां, सेरों तैयार कर रख छोड़ते हैं। सन्निपात आदि मारक व्याधियोंके नाशार्थ क्वाथके साथ इसका बहुत उपयोग होता है। मस्तिष्कको शक्ति बढ़ानेके लिये तो यह वनस्पति पुराने कालसे सर्व प्रसिद्ध हो रही है और आज भी सरस्वतीके ही नामसे पुकारी जानेसे इसकी कद्र तथा आवश्यकता प्रत्येक जन भले प्रकार समझता है; परन्तु ऐसी उपयोगी वनस्पति हमारे निर्जल प्रान्तमें बहुत कम स्थानोंमें पैदा होती है। इससे आवश्यकताके समय इश्तिहारी वैद्योंके यहांसे उचितसे कहीं अधिक मूल्य देकर भी वी.पी. द्वारा मंगाते हैं। द्रव्य बहुत लगने पर भी वे इसे प्राप्त हो जाना ही गनीमत समझ अपनेको भाग्यशाली गिनते हैं। पर खरीदनेवालोंको इसकी पहिचान भी न होनेसे वह पुरानी वा नवीन है इसका निर्णय नहीं कर सकते।

पंसारियोंका तो आजकल दिन दिन विश्वास उठ रहा है। वे न जानें कौन कैसी सड़ी गली पुरानी ब्राह्मी वा ब्राह्मीके नामसे कुछ और ही वनस्पति—रुंखड़ी देकर अपना 'उल्लू' सीधा कर लिया करते हैं इसका हर समय संशय बना रहता है। परन्तु अब सुधारका समय है, आज इस सम्मेलनके ज़मानेमें ऐसी अन्धेर रहना कठिन है, इसीसे इन कष्टोंसे बचनेके लिये अनेक वैद्योंने इस प्रान्तीय कार्यालयसे सहायता मांगी है कि यह कहां किस भावसे प्राप्त हो सकती है। तदनुसार इस कार्यके लिये कई सामयिक तथा वैद्यक मासिक पत्रोंमें सूचनाएँ निकाली गयीं और अनेक विद्वान सज्जनोंको पत्र लिखे गये जिनके उत्तरसे हमें जो जानकारी मालूम हुई है उसका सारांश प्रत्येकको अलग अलग न लिख कर इस सूचना द्वारा प्रकाशित किया गया है। आशा है कि इस उद्योगसे प्रान्तवासी वैद्यगण संतुष्ट होंगे।

ब्राह्मी (Hydrooctyle Asiatica No. umbellifiraes) सारे भारतमें उत्पन्न होती है परन्तु बहुत सूखे भागोंमें नहीं मिलती। जहां पावस अधिक और पानी बहुत दिनों तक भरा रहता है वहां वह प्रायः पैदा होती है।

बंगाल, मलबार, कोकन, माथेरान, महाबलेश्वर खण्डाला, मुंबई, बड़ौदा, मध्यभारत, हिमालय, देहरादून आदि स्थानोंके आस-पास यह बहुत प्राप्त होती है। बम्बईमें इसे ब्राह्मी, कारिगा, काखिना नामसे पुकारते हैं और वहां बागों को किनारी वा क्यारे भरनेमें बहुत लगायी जाती है। बंगालमें इसे 'थलकुरी' कहते हैं। हमारे प्रान्तमें यह केकड़ी जिला, मेवाड़, बूंदी, कोटा, भरतपुर आदिकी ओर भी खूब मिलती है।

ब्राह्मी एक वर्षसे ज्यादा नहीं ठहरती है; किन्तु शीघ्र ही बिगड़ कर सड़ जाती है। पुरानी ब्राह्मीमें गुण कुछ नहीं रहता है। ज्यों ज्यों ज्यादा पुरानी होती है त्यों त्यों इसका हरा रङ्ग उड़ कर सफ़ेद मैला हो जाता है। तथा स्वादमें भी फीकापन आजाता है। साथ ही पत्तोंका असली करडापन भी नहीं रहता है।

पंसारियोंसे तथा दिल्ली आदिसे जो ब्राह्मी हमें मिलती है वह कभी कभी तो २। ३ वर्षसे भी अधिककी पुरानी होती है और इसीसे शास्त्रोंमें कहा हुआ इसका वास्तविक गुण सर्वत्र मालूम नहीं पड़ता है।

ब्राह्मीके पत्तोंमें एक प्रकारका तैल रहता है जो धूपसे उड़ जाता है। बिना तैलवाली ब्राह्मी नवीन होने पर भी गुणकारी नहीं होती है क्योंकि ब्राह्मीका मुख्य गुण उसके तैलमें ही रहता है इस-लिये इसे धूपमें सुखा कर नि-कसी न बनानी चाहिये।

ब्राह्मी सूखीका असली भाव १) से १॥) रुपये सेर तक प्रायः सर्वत्र रहता है। इस भावमें चाहिये उतनी प्राप्त हो सकती है। इस प्रान्तवालोंको बड़ौदे की ओरसे मँगानेमें सुभीता रहेगा। वहां रुपये एककी सेर १ से २॥ सेर तक मिलती है। बंबईसे भी सस्ते-में आसकती है। वहां बाजारमें बिकने आती है, कई आठ आना रतल में इसे लेकर सुखा कर इधर मारवाड़में लाते हैं। कोई कोई

वहां इसका स्वरस निकाल लेते हैं। हरीकी अपेक्षा सूखी ब्राह्मी की कीमत अधिक लगती है, स्वरस और भी महंगा पड़ता है। जावरेको ओरसे भी मँगायी जा सकती है पर भाव बहुत सस्ता नहीं रहता है। हरिद्वारसे भी यह सस्तेमें मिल सकती है, वहांसे आठ आना सेर हमारे पास आयी है। जो लोग यात्रा करने जाते हैं वे हरिद्वार आदिसे अपने साथ थोड़ी बहुत अवश्य ले आवें। जिन्हें ब्राह्मीकी बहुत आवश्यकता पड़ती है वे कोकणकी ओरसे भी सस्तेमें मँगा सकते हैं, अतः जिन्हें जिस ओरका सुभीता मिले वह उधरसे ही मँगा कर तृप्त हों।

भिन्न भिन्न स्थानोंसे ब्राह्मी भेजनेवाले कुछ सज्जनोंके नाम नीचे दिये गये हैं जिन के द्वारा पत्रव्यवहार कर ब्राह्मी मंगायी जा-सकती है। किस किस भावमें प्राप्त हो सकती है उसका विवरण भी दिया गया है। किराया आदिका खर्च मँगाने वालोंको अलग लगेगा।

नाम पता आदि	भाव सेर पर हरी, सूखी, स्वरस,
(१) वैद्यराज यादव जी श्रीकम जीआचार्य होली चकला, बोहरा बाजार बंबई—	... ... पत्र व्यवहार करिये
(२) कविराज पं० अमरनाथ औदीच्य वैद्यशास्त्री वनस्पति औषधालय—देहरादून	... २) २॥)
(३) वैद्य हीरा भाई दलपत भाई नरसिंहजीकी पोल— बड़ौदा...	... ... पत्र व्यवहार करिये
(४) राधाकृष्ण मास्टर-प्राइमरी स्कूल धार	१) ३) ...
(५) वस्तादवेंकूट स्वामी मायडु आयुर्वेदिक वैद्य नसरापुर— जिला कृष्णा	... ... पत्रव्यवहार करिये

नाम पता आदि	भाव सेर पर			
	हरी,	सूखी,	स्वरस	
(६) सोमेश्वर शर्मा वैद्य मु० मोबारकपुर बेलागंज जि० गया	१)	...	४)	
(७) विष्णु बलवन्त थोरात ज्योतिषी पो० पालशेट जिला रत्नागिरी प्रां० कोकण	...	३)	...	
(८) बाबू खड्गबहादुर लोक-बहादुर श्रेष्ठ पाटन थथू—ताम्पाल हाल—नैपाल	...	४)	...	
(९) पं० भवानीशंकर जी राजवैद्य उदयपुर	...	...	...	
(१०) मैनेजर योगाश्रम कीटगंज प्रयाग	...	१)	...	
(११) राजारामजी गुप्त, मु० कलैया पो० आदापुर जिला चम्पारन	...	२)	...	
(१२) वैद्य मिश्रीलाल जी नन्दलाल C/o दिल्लीगेट—अहमदाबाद	...	...	...	पत्रव्यवहार करिये।
(१३) पं० आयोध्या प्रसाद जी वैद्य झांसी	...	...	...	”
(१४) श्रीस्वामी नारायण का मन्दिर गढरा (काठियावाड़)	...	...	...	”
(१५) पं० शिवचन्द्र जी वैद्य-राज आयुर्वेद-प्रचारक कं० हरिद्वार	...	...	...	”
(१६) वैद्य सन्तलाल शर्मा C/o चवड़ी बजार दिल्ली	...	...	...	”
(१७) राजवैद्य शीतल प्रसादजी दिल्ली	...	...	...	”

नाम पता आदि	भाव सेर पर
	हरी सूखी स्वरस
(१८) चन्द्रनसिंह विष्ट अध्यापक अपर स्कूल बडैन पो० गवील जिला गढवाल	... ...

बंगालमें यह बहुत होती है परन्तु इधरवालोंको सस्ती नहीं पड़ती है इससे इधरके पते आदि नहीं दिये गये हैं।

इस सम्बन्धमें अभी और भी पत्र आरहे हैं अतः आगामी सूचना में उनका सारांश दिया जावेगा।

पूनमचन्द तनसुखव्यास
राजपूताना प्रान्तीय मन्त्री
आयुर्वेद महामण्डल, ब्यावर।

षष्ठ वैद्यसम्मेलन।

———:०:———

परिवर्तित तिथियोंके अनुसार ६ से १२ जनवरी तक अर्थात् माघ कृष्ण ८ से माघ कृष्ण ११ तक षष्ठ वैद्य-सम्मेलनके अधिवेशन सफलता पूर्वक हो गये। सम्मेलन-के पहले कलकत्तेके कविराजोंमें स्वागतकारिणीके कुछ सज्जनोंके कारण मतभेद हो गया था; परन्तु समय पर आयुर्वेद महामण्डलके मन्त्री और बम्बई प्रान्तीय मन्त्री पण्डित यादव जी त्रीकम जी आचार्यके उद्योगसे तथा कविराज श्यामादास वाचस्पति, कविराज राजेन्द्र नारायण सेन, कविराज हेमचन्द्र सेन, कविराज गणनाथ सेन, पण्डित बाबूराव पराड़कर प्रभृतिके परिश्रमसे और उभय पक्षके कविराजोंकी कर्तव्यबुद्धि तथा उदारतासे झगड़ा आपसमें तय होगया और कलकत्तेके सब कविराज सम्मेलनमें सम्मलित हुए। सभापतिका शुभागमन सम्मे-लन तिथिके एक दिन पहले बड़े सबेरे हुआ। यद्यपि जाड़ेका दिन

और तड़केका समय था, परन्तु स्टेशनमें प्रायः सभी कविराजोंने उपस्थित होकर सभापतिका स्वागत किया। स्वागतकारिणी सभाके सभापति वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेनजीकी ओरसे हार तुर्रा देनेके बाद अन्य सज्जनों और सभासमितियों की ओर से हार आदि समर्पित हुए। इसके पश्चात ठाठके जलूस और विविध जयघोषोंके साथ सभापतिका जलूस रवाना हुआ। सभापतिका निवास पथरियाघट्टामें वैद्यरत्न योगीन्द्रनाथजीके यहाँ हुआ था और प्रतिनिधि लोग वहीं पास ही श्रीयुक्त राधाकृष्ण गनेड़ीवालाके मकानमें प्रदर्शिनी वाले सुविशाल भवनमें ठहराये गये थे। प्रतिनिधियों का आदरातिथ्य वैद्यराज पं० रामदयालु शर्मा, काव्यतीर्थ पण्डित महादेव प्रसाद शर्मा प्रभृतिके तत्वावधानसे बहुत अच्छा हुआ। यद्यपि प्रतिनिधियोंकी संख्या गत वर्ष से अधिक न रही होगी तथापि प्रतिनिधि मद्रास, मलाबार हैदराबाद, महाराष्ट्र, बम्बई, गुजरात, राजपूताना, मध्यभारत, सीमाप्रान्त, राजपूताना, युक्त प्रदेश और अवध, नैपाल, विहार मध्य प्रदेश, बघेलखण्ड, पूर्व बङ्गाल, पश्चिम बङ्गाल, आसाम प्रभृति भारतके सर्व प्रान्तोंके उपस्थित थे।

सम्मेलन जोड़ासांकूमें श्रीमान् हरेन्द्रकृष्णशीलके सुविशाल राजभवन में हुआ था। एक प्रकार सम्मेलनमें भारतवर्षके सब प्रान्तोंकी आयुर्वेदिक विभूति उपस्थित थी; जिसे देख दर्शकोंके हृदयमें अपार आनन्द और आयुर्वेदके प्रति अनुपमप्रेम उत्पन्न हो रहा था। सम्मेलनके दिन सुविशाल भवन खचाखच भरा हुआ था। आरम्भमें श्रीयुक्त पण्डित लक्ष्मणशास्त्री द्रविड़ ने मङ्गलाचरण किया फिर श्रीयुक्त सुधीन्द्रनाथ सेन, पण्डित रामभजन शर्मा (जबलपुर) पण्डित गोविन्दप्रसाद शास्त्री (जबलपुर) कविराज ताराचरण शास्त्री प्रभृतिने सभापतिके सम्बन्धमें तथा स्वागत विषयमें कुछ कविता (प्रथम सज्जनने बंगलामें शेषने संस्कृत में) पढ़ी और फिर स्वागतकारिणी सभाके सभापति वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन महोदयका स्वागत संभाषण हुआ। यह भी संस्कृतमें हुआ और ललित तथा गम्भीर शब्दोंसे युक्त हुआ। इसमें बङ्गालका आयुर्वैदिक महत्व वर्णित था और सब प्रान्तके प्रतिनिधियोंके

स्वागतके लिये आनन्द प्रकाश किया था। इसके पश्चात् कविराज श्यामादास वाचस्पति महोदयने बङ्गाल और जयपुरका सम्बन्ध बतलाते हुए प्रेम पूर्वक शब्दोंमें आयुर्वेद मार्तण्ड पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी महोदयको सभापति बनानेका प्रस्ताव किया, जिसका अनुमोदन कविराजराजेन्द्रनारायणसेन, कविराज हेमचन्द्रसेन, कविराज पं० माधवचन्द्र तर्कतीर्थ, कविराज गणनाथसेन, कविराजयामिनी भूषण राय, कविराज शीतल चन्द्र चटर्जी प्रभृति कलकत्तेके तथा प्रत्येक प्रान्तके कुछ प्रभावशाली वैद्योंके अनुमोदन करनेपर सभापति पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी महोदयने सभापति का आसन ग्रहण किया। आपकी वक्तृता विस्तृत और महत्वपूर्ण आवश्यक विषयोंके विवेचनसे पूर्ण थी। वह आजके अङ्कके साथ वितरित की जाती है।

रात में विषय निर्वाचन समिति का अधिवेशन हुआ। दूसरे दिन सम्मेलन १२ बजे से किया गया। प्रथम सहानुभूति के पत्र पढ़े गये जिनमें श्रीमान् द्विजेन्द्र काशिराज के युवराज, महाराज दीनाजपुर, कलकत्तेके गवर्नरसाहबके प्राइवेट सेक्रेटरी, बङ्गाल कौंसिल की कार्यकारिणी सभा के सभासद, हाईकोर्टके जज प्रभृति सब श्रेणी के लोगों के पत्र और तार थे। आज कई प्रस्ताव पास किये गये। कुछ प्रस्ताव दूसरे और तीसरे दिन भी स्वीकृत हुए। स्वीकृत प्रस्ताव इसी अङ्क में अन्यत्र मुद्रित हैं। एक प्रस्ताव मद्रास सरकारके उस उत्तर पर पुनः विचार करनेके विषयमें था जो मद्रासकी कौंसिलमें आयुर्वेदके विषय में सहायता देनेके लिये माननीय कृष्णरावने उपस्थित किया था और जिसके विषयमें सरकारी सभासद आनरेबल शिवस्वामी आयर ने कहा था कि आयुर्वेद वैज्ञानिक पद्धतिपूर्ण और उन्नति-पथारूढ़ नहीं है उसे सरकार सहायता नहीं दे सकती। इस प्रस्ताव को कई कारणोंसे विशेषकर वैद्यरत्न पण्डित डी० गोपालाचार्लू महोदयके अनुरोधसे प्रस्तावकोंने वापस ले लिया। प्रस्तावोंके पश्चात श्रीयुक्त बाबू सत्यचरण शास्त्रीने व्याख्यान दिया कि आप लोग सम्मेलनके पीछे जो खर्च करते हैं वह सार्थक होना चाहिये। पहले हमारे आयुर्वेद का प्रचार भारतमें ही नहीं सुमात्राजावा प्रभृति द्वीपोंमें

भी था और वहां आर्योंने स्वास्थ्यनिवास बनाये थे । कलकत्तेके पण्डित रामदयालजीने कहा कि ऐसी दशामें भी वैद्योंकी दवासे अधिकांश प्रजा लाभ उठाती है और भ्रमयुक्त तथा पसारियोंके यहांकी सड़ी गली औषधियोंसे भी जो लाभ होगा उतना चमकदार शीशियोंमें भरी हुई विदेशी दवा से भी नहीं होता । कुष्टचिकित्सक पण्डित कृपाराम शर्मा जीने अपने आराम किये हुए कई रोगी दिखाये और कहा कि जो लोग कुष्ट चिकित्सा सीखना चाहें वे मेरे कुष्टाश्रममें आकर रहें मैं उन्हें सब प्रत्यक्ष क्रिया बताऊंगा ।

तीसरे दिन सबेरे प्रतिनिधियों का फोटो लिया गया । आज विशेषकर निबन्ध पढ़े गये । किन किन सज्जनोंके किन किन विषयों के निबन्ध पढ़े गये इसकी सूची स्वागतकारिणी सभासे प्राप्त होने पर हम छापेंगे । चौथे दिन मन्त्रीने वार्षिक विवरण पढ़ सुनाया और वह स्वीकृत हुआ । इसके पश्चात गतवर्ष मथुरामें तथा इस वर्ष भिन्न भिन्न स्थानोंमें आयुर्वेद विद्या पीठकी परीक्षा देकर जो उत्तीर्ण हुए हैं उन्हें सर्टीफिकट और पदक दिये गये । पदक देनेमें रसायन शास्त्री पण्डित श्यामसुन्दराचार्य वैश्य, सेठ मंगतराम विश्वेश्वर प्रसाद तथा पण्डित अर्जुन मिश्रने बड़ी उदारता दिखाई । गत वर्षके लिये भी आप लोगोंने पदक देने कहा है । कलकत्तेके श्रीयुक्त सेठ रामचन्द्र जेठा भाई जीने भी डेढ़सौ रुपये तकके पदक देनेकी प्रतिज्ञा की है । आप लोगोंको सम्मेलनने बहुत बहुत धन्यवाद दिया और आशा की कि अन्य धनी सज्जन आप लोगोंका अनुकरण करेंगे । नियमावलीके सुधारके सम्बन्धमें बड़ा झक झक हुआ; किन्तु कार्य कुछ न हुआ अन्तमें एक कमिटीको नियमावलीके संशोधनका काम सौंप दिया गया । कार्य कर्त्ताओंके चुनावके सम्बन्धमें भी बहुत झक झक हुआ । बहुत अस्वीकार करने पर भी इस वर्षके लिये जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल फिर मन्त्री बनाये गये । सभापति पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी, सहकारी सभापति कविराज योगीन्द्रनाथ सेन और पण्डित ठाकुरप्रसाद शर्मा प्रयाग, सहकारी मन्त्री बाबू सोहन लाल जैन वैद्य और डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्मा नियुक्त हुए ।

कोषाध्यक्ष बाबू सांवलदास रईस और आयव्यय निरीक्षक पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर नियुक्त हुए। आयुर्वेद विद्यापीठके सभापति वैद्यव्रतस कविराज गणनाथ सेन, सहकारी सभापति पं० डॉ० गोपाला चार्लू और प्रयागके पण्डित केदारनाथ शर्मा नियुक्त हुए। उपमन्त्री पण्डित रामेश्वर मिश्र वैद्य शास्त्री और पण्डित सूर्य प्रसाद बाजपेयी नियुक्त हुए। अपील बेमौके हुई इसलिये केवल १६५ वसूल हुआ और कुछ रुपयों की प्रतिज्ञा हुई आगामी सम्मेलन मद्रासमें होना निश्चित हुआ।

अनुभूत प्रयोग।

[कलकत्तेके षष्ठ वैद्यसम्मेलनमें कथित]

चिकित्सक चूड़ामणि पं० बालमीकि शर्मा राजवैद्य रीवां।

नपुंसकत्वके लिये—अभ्रकभस्म ४ तो०, हरताल से मारा हुआ वंगभस्म २ तोला, चन्द्रोदय एक तोला, शुद्ध भांग सात तोला, चातुर्जात (तज पत्रज, इलायची, नागकेसर प्रत्येक दो दो तोला) आठ तोला, जायफल दो तोला, मिर्च २ तोला, पीपल दो तोला, सोंठ दो तोला, लवङ्ग दो तोला, जावित्री दो तोला, शक्कर १७ तो० सबका कपड़छान चूर्ण कर घी और शहदसे अलग अलग घोटकर दोसे चार माशे तककी गोली बनावे। साधारणतः ३ माशेकी गोली बनाकर दूधके साथ लेवे। जिसे भांग न हजम होती हो वह अफीम डाल सकता है किन्तु जिसे अफीम भी पसन्द न हो वह सतावर मिलावे। कई बारका अनुभूत है। भाव प्रकाशके बाजीकरण प्रकरणमें इसका नाम मदनमंजरी लिखा हुआ है।

अर्श के लिये—यदि बादीको बवासीर (वातार्श) हो तो अग्नि मुख लौह तथा अर्शकुठाररस लाभदायक है। दोनों दवाइयां ग्रन्थों में लिखी हैं। इनसे अच्छा लाभ होता है।

रक्तार्श—खूनी बवासीरमें चन्द्रकला रस, स्वर्णमालिनी बसन्त तथा रक्तारि ये तीनों ग्रन्थोक्त औषधियाँ अनुभूत हैं। अलग अलग अथवा समय विशेषसे तीनों दी जा सकती हैं।

२ आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य बम्बई।

रक्तार्श—हीरा दक्खन दो तोला, कहरबा एक तोला, नीम की निबौली दो तोला, बकायन की निबौली एक तोला, रसवत (जितनेमें गोली बँध सके) पहले कहरबाको गुलाब जलमें पीस ले; फिर सबको पीस चने बराबर गोली बनावे। दो दो गोली सबेरे शाम दिया करे। बीमारी थोड़ी ही हो तो केवल रातको सोते समय एक गोली लिया करे।

३ पण्डित जुगतराम भट वैद्य बम्बई।

स्वादिष्ट विरेचन—अथवा पलविस ग्लिसराइजा कम्पौंड मुलहठी दो तोला, सनाय एक तोला, सौंफ पौन तोला, शुद्ध गन्धक आधा तोला, शक्कर ६ तोला; यह चूर्ण बवासीरमें लाभदायक है। स्वादिष्ट है और दस्त साफ लाता है। आमको निकालता और खानेमें स्वादिष्ट है। खुराक ३ से ६ माशे तक झण्डु फार्मसी बम्बइ तथा गुजरात आयुर्वैदिक फार्मसीमें तैयार रहता है।

४ पण्डित रामदयालु शर्मा वैद्य कलकत्ता।

अर्श के लिये—पिपरमेंट का तेल चार बूंद एक पानी भरे लोटे में डाल कर पायखानेके समय ले जावे और उसीमें आबदस्त लिया करे। छः महीने तक ऐसा ही करता रहे। इससे पित्ताश, रक्तार्श और गर्मीके मसे नष्ट होते हैं और पांच छः वर्ष तक नहीं उभड़ते।

रक्तार्श तथा रक्तातिसार—कुड़ेकी (कुरैया) छालीका काढ़ा कर उसमें चीनी मिलाकर शरबत पकाले। यद्यपि शर्बत कड़ू होगा तथापि इसे दिनमें दो तीन बार एक एक चम्मच लेनेसे खूनी बवासीर बन्द होती है।

पसुली चलना (ससणी, बराध, डब्बा) नवसादर अथवा बाजारका अमोनिया क्लोराइड दिनमें सात आठ बार एक एक रत्ती दूधके साथ देवे। इससे नयी अथवा पुरानी पसुलीकी बीमारी एकसे सात वर्ष तकके लड़केकी अच्छी होती है।

गुदद्वारसे—पीब अथवा आम पड़ती हो तो भैंसकी सींगोंकी नोकमें जो हिस्सा होता है उसे कूट पीस कर धुनी देवे। कुछ दिनों तक धुनी लेते रहनेसे आम अथवा पीबका आना बन्द होगा।

खांसी—ऊखका रस पांच तोला कड़ाहीमें चढ़ाकर पकावे जब गाढ़ा होने लगे तब उसमें १० तोले हल्दी, छोटीइलायची एक तोला, केसर आधा तोला, जायपत्री आधा तोला, खसखस अढ़ाई तोला जायफल आधा तोला, दालचीनी आधा तोला, सब दवाइयां कूट छान कर मिलावे। उसे एक बारमें एक तोला खाया करे।

मुँह आना—संगजिरा एक तोला, गेरू एक तोला, तूतिया एक रत्ती तीनों को कूट कपड़ छान कर रखे । इस चूर्ण को थोड़ा थोड़ा जीभमें लगावे और लार बाहर गिरावे । चाहे तो चूर्ण घीमें मिला कर लगावे । यदि छोटे बच्चोंके लगाना हो तो तूतियाके बदले भुनी हुई फिटकरी मिलावे ।

समाचार

पण्डित सभाकी आयुर्वेदिक परीक्षा—दो वर्षोंसे बांकीपुरमें एक पण्डित सभा स्थापित हुई है, उसने आयुर्वेदिक परीक्षाओंका लेना आरम्भ किया है। उसके प्रधान सञ्चालक आयुर्वेद रत्नाकर पण्डित व्रजबिहारी चतुर्वेदी वैद्य हैं । अतएव पण्डित जी धन्यवादके भागी हैं। उनकी प्रथम परीक्षामें महदेव त्रिपाठी बांकीपुर, अयोध्या त्रिवेदी पटना, शम्भुदत्त चतुर्वेदी आरा, नन्दकुमार चतुर्वेदी पटना, चन्द्रिकाप्रसाद शर्म्मा बांकीपुर, तेजमणि उपाध्याय बांकीपुर, श्रीनारायण शर्म्मा मुजफ्फरपुर । द्वितीय श्रेणीमें तारिणी प्रसाद मिश्र आरा, रामसिंहासन ओझा गया, रामलखन पांडेय हाजीपुर, दीनदयाल पाठक गया, जगदेव मिश्र गया, रामदीन शर्म्मा छपरा, शशिबिहारी मिश्र पटना, नन्दकिशोर शर्म्मा औरङ्गाबाद, भगवत प्रसाद पांडेय मुजफ्फरपुर, सुरेन्द्रमोहनभट्ट मुजफ्फरपुर, गयादत्त शर्म्मा हाजीपुर ।

वैद्यसभाका उत्सव—लखनऊकी वैद्यसभाका चौथा वार्षिकोत्सव गत ११ अप्रेलको धूमधामसे करदहाके ताल्लुकेदार पं० चन्द्रभाल जी वाजपेयी महोदयके सभापतित्वमें सफलता पूर्वक होगया । श्रीगदाधर औषधालयसे शाह गंगाप्रसादकी धर्मशाला तक ध्वजा पताकाओंकी शोभा लोगोंको आकर्षित कर रही थी । लगभग साढ़ेतीन सौ वैद्य और रईसोंकी उपस्थिति थी । सरकारकी विजय प्रार्थना की गयी । पं० रामनाथ शास्त्री, पं० जगतनारायण मुल्ला, पं० श्यामलाल जैतली आदि वैद्योंके तथा बा. बनारसी लाल और बाबूश्याम सुन्दरदास बी. ए के आयुर्वेदपर व्याख्यान हुए । सभापतिने पं० जयनारायण पांडेयको आयुर्वेद-विद्यापीठकी आयुर्वेदविशारद परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका प्रमाणपत्र प्रदान किया । पं० गोकर्णनाथ मिश्रका व्याख्यान हुआ । सभापति महोदयका व्याख्यान प्रभाव पूर्ण हुआ । आपने कहा "रोगोंको समूल निवारण करनेमें आयुर्वेदकीसी शक्ति अन्य चिकित्सा शास्त्रोंमें नहीं है । तथा आयुर्वेदशास्त्र सर्वाङ्ग पूर्ण है । " आपने यह भी बतलाया कि आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये क्या क्या करना चाहिये ।